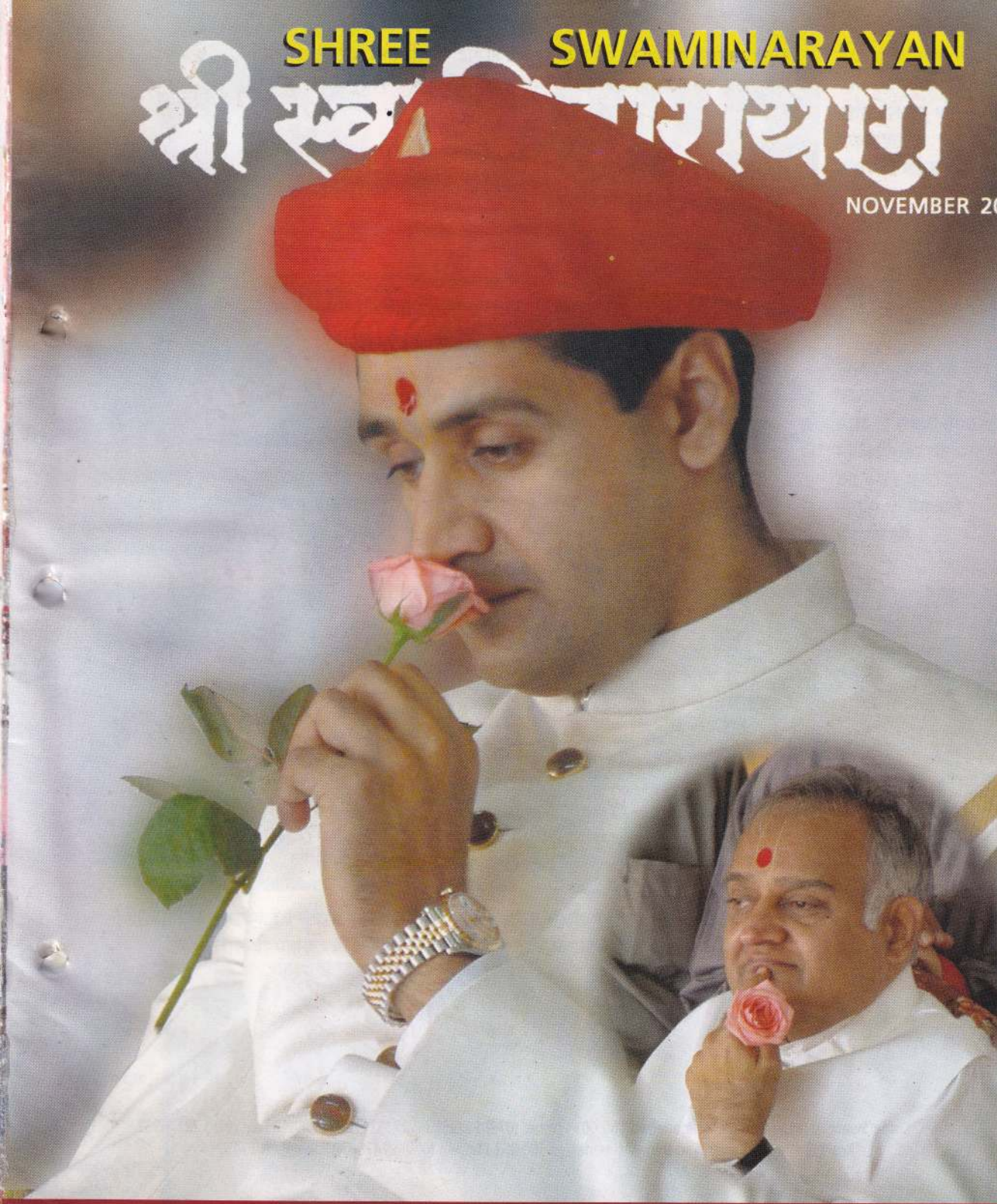
SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्व[illegible]रायण

NOVEMBER 2[illegible]



પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1

निवृत्त आचार्य प.पू.ध.धु. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा वर्तमान आचार्य
प.पू.ध.धु. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का नववर्ष पर शुभाशिष पत्र ।

His Holiness Acharya Maharaj
Shri Koshalendraprasadji Pande

દીપાવલી.
નૂતનવર્ષ - સં. ૨૦૬૨

દેશ/વિદેશમાં વસતા સર્વાવતારી સર્વોપરિ ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણના દૃઢ આશ્રયયુક્ત સૌ સત્સંગીજનોને નૂતનવર્ષ અને દીપાવલીના મંગળ પર્વ પ્રસંગે, શ્રી હરિએ સ્વયં સ્વહસ્તે ઉપદેશમાં લઈ મંદિરોને પોતાનું જ સ્વરૂપ કહેવા કૃપાપૂર્વક શ્રી નરનારાયણ દેવ પરંપરાગત સમીપની આપના દ્વારા શુભાશીર્વાદ સહ મંગળ શુભકામનાઓ પાઠવીએ છીએ.

આપનું નૂતનવર્ષ દરેક પ્રકારે શુભ અને મંગળમય નીવડે - વિશેષ જાગૃતિપૂર્વક અને શ્રી હરિની આજ્ઞાઓ પાળવામાં વિશેષ સજાગ રહે તથી પરમ કૃપાળુ શ્રી નરનારાયણ દેવના ચરણોમાં નમ્ર પ્રાર્થના સહ

શુભાશીર્વાદ સહ

Shree Swaminarayan Temple Ahmedabad 380 001 Phone: (079) 22133835, 22132170, 22136818 Fax: (079) 22176992
Resi : Shree Swaminarayan Bagh Ahmedabad 380 052 Phone : (079) 27478070 Fax : (079) 27452145



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ नवम्बर - २००५

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	आशीर्वचन	४
४.	श्री स्वामिनारायण भगवान की आरती का संक्षिप्त ज्ञान	५
५.	बात असीम श्रद्धा की	६
६.	श्री रामानुजाचार्य	७
७.	भक्ति	१०
८.	श्रीहरि व्यावक सर्वत्र समान	११
९.	सत्संग की चाहना	१३
१०.	सत्संग सुरभि	१४
११.	मैं भगवान होऊँतो किसी की नाक फूटने नहीं देऊँ	१६
१२.	सत्संग बालवाटिका	१८
	(१) खट्टी छाछ अर्थात् ?	
	(२) झुका वह शभी को पसंद आया	
१३.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायणने प्रथम के ३८ वें वचनामृत में कहा है कि - जो सत्संगी हों वे जब से सत्संग में आये हों तब से अपने मन को टटोले कि "प्रथम वर्ष में मेरा मन ऐसा था इस के बाद ऐसा था, भगवान के प्रति इतनी वासना थी, जगत के प्रति इतनी थी । इस प्रकार प्रतिवर्ष का हिसाब रखना चाहिए तथा अपने मन में जितनी जगत की वासना बाकी रह गयी हो उसे धीरे-धीरे छोडते जाना चाहिए । यदि इस प्रकार विचार नहीं करेगा तो सभी एकत्रित होती जाएगी और वासना हटेगी नहीं । जैसे कोई बनिया का उधार प्रति महीने नहीं दे तो वह भार बढता जाता है, यदि प्रति महीने देते जायें तो हल्का हो जाता है, यह विचार करते रहना चाहिए ।

मन की वासना को दूर करने के लिए निरन्तर सत्संग करना चाहिए । भगवान श्रीहरि कहते हैं कि पानी के गड्ढे को भरना हो तो कोई आज दो घड़ा . पानी डाल दे पुनः दो दिन के बाद दोघड़ा डाल दे तो उससे गड्ढा भर नहीं जायेगा । क्योंकि पहले दिन का पानी उसी दिन सूख जायेगा तथा दूसरे दिन का भी पानी इसी तरह सूख जायेगा । यदि गड्ढ को भरना हो तो सतत पानी की पतली ही क्यों न धार हो चालू रखनी पड़ेंगी तभी गड्ढा भर सकता है अन्यथा तो सूख ही जायेगा । इसी प्रकार सत्संग निरन्तर करना चाहिए । अंगारे में आग तो है लेकिन उसे वायु का योग न होतो वह राख से ढक जायेगी और बूझ जायेगी । इसी प्रकार अपने जीवात्मा को प्रभु के प्रेम रंग में, परमात्मा के मार्ग पर सतत चलते रहना होगा । इसलिए निरन्तर दर्शन, कथाश्रवण, सत्संग का योग करते रहना चाहिए । गाँवो में सत्संग सभा, छोटे - छोटे उत्सव, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम करते रहना चाहिए जिससे जीवात्मा को खूब बल मिलता है ।

ऐसे भगवान के बल की हम सभी में विशेष वृद्धि हो ऐसी नूतन् वर्ष के मंगल दिन पर परम कृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना । अपने "श्री स्वामिनारायण मासिक" के सभी सभ्यों तथा वाचको को नूतन वर्ष का अभिनंदन के साथ जय श्री स्वामिनारायण ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अक्टम्बर - २००५

१. प.भ. प्रशांत सी. व्यास के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।
२. डॉ. निकुंज घनश्यामभाई (आरीवाला) के यहाँ पदार्पण, ओढव ।
५. प.भ. बाबुभाई परसोत्तमदास पटेल के यहाँ पदार्पण, कलोल ।
प.भ. कचराभाई सांकाभाई पटेल के यहाँ श्री गणेश प्रोविझन स्टोर्स के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, बोपल ।
प.भ. अरविंदभाई लक्ष्मणभाई हीरपरा के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।
प.भ. पंकजकुमार बाबुलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, कलोल ।
६. प.भ. नवीनभाई मणीलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, महेसाणा ।
७. प.भ. शांतिभाई कस्तुरचन्द झिंझुवाडीया के पंचरत्न ज्वेलर्स में पदार्पण, सी.जी. रोड ।
८. प.भ. मुकेशभाई चन्द्रकांतभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, सेटेलाईट ।
९. श्री मोहनभाई एस. मीठावाला की दुकान में पदार्पण, नवरंगपुरा ।
हरेकृष्ण एन्टरप्राईज में पदार्पण, दरियापुर ।
१०. श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर सरस्वती पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
११. श्री प्रकाशकुमार कुबेरदास गज्जर के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण, कलोल ।
प.भ. विष्णुभाई परसोत्तमदास के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, भूयंगदेव ।
१२. प.भ. शांतिलाल शामजीभाई प्रजापति के यहाँ पदार्पण, राजामेहता की पोल ।
डॉ. भाविन रमेशचंद्र परीख के योगी बहन होस्पिटल के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, मणीनगर ।
प.भ. दीपकभाई हीरालाल पटेल के यहाँ पदार्पण, चांदखेडा ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर रामबाग कांकरिया शिखर पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. रमणभाई बबलदास गज्जर के जयस्केन ग्राफीक्स में पदार्पण, बारडोलपुरा ।
१३. प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में संत हरिभक्तों ने ३३ वाँ प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया ।
१४. प.भ. दशरथभाई खेमाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।
१६. प.भ. संजयभाई आर. सोनी के श्रीजी आर्ट ज्वेलर्स में पदार्पण, रतनपोल ।
प.भ. जीगरभाई दीपकभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मणीनगर ।
प.भ. शंकरलाल सोमदास पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप ।
प.भ. चन्द्रकांतभाई बबलदास गज्जर के यहाँ पदार्पण, घीकांटा ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शरदोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में शरदोत्सव में पदार्पण ।
१७. प.भ. बलदेवभाई फुलाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मोटेरा ।
१८. प.भ. कांतिलाल भगवानदास पटेल के यहाँ पदार्पण, सायोनासीटी, चाणक्यपुरी ।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर बावळा (संस्कारधाम) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२९. प.भ. बाबुभाई टी. पटेल (डीलाईट रेफ्रिजरेशन) के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।
३१. श्री स्वामिनारायण मंदिर (कांकरिया यज्ञ की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री सहजानंद गुरुकुल असारवा में पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में पदार्पण ।

आशीर्वचन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

ता. २५-९-०५ के दिन बापूनगर एप्रोच मंदिर के सभा मंडप में अहमदाबाद शहर नरनारायणदेव युवक मंडल के शिबिर प्रसंग में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री के मुख से निकले आशीर्वचन को "श्री स्वामिनारायण मासिक" के वाचको के सुख के लिए यहाँ लिखने का प्रयास करते हैं ।

मुसलमान की स्त्री ने महाराज को एक दातोन दिया, जिससे उसकी मुक्ति हुई । उसका कल्याण हो गया । विचार करें तो महाराज ने हमारे लिए कुछ बाकी नहीं रखा है । नंद संत कहते कि केवल आंख खोलके देखने की जरूरत है । किसी काल में दुःख आने का प्रश्न ही नहीं है ।

शिक्षापत्री में महाराज ने लिखा है कि -

ये पालयन्ति मनुजाः
सच्छास्त्रप्रतिपादितान् ।
सदाचारान् सदा तेऽत्र परत्र च
महासुखाः ॥

श्रीमद् भागवत महापुराणादिक सत्शास्त्रो में जीव के कल्याणार्थ जो प्रतिपादन किया गया है वह है अहिंसा आदिक सदाचार इसका जो पालन करते हैं उसे इस लोक तथा परलोक दोनें में सुख मिलता है ।

शिक्षापत्री में महाराजने प्रथम मनुष्य बनने की बात कही है तिलक चन्दन तो बाद की बात है । हिंसा नहीं करना, आत्मघात नहीं करना, मांस नही खाना, दारु नहीं पीना, चोरी नहीं करना, व्यभिचार नहीं करना, व्यसन का त्याग करना, घुस नहीं लेना, इत्यादिक सदाचार स्त्री धर्म को बताया है । दुराचार के त्याग का प्रथम श्लोक लिखा है । इन नियमों का पालन करने के बाद ही कंठी धारण करनी चाहिए । गुरुमंत्र लेने के बाद ही उपासना की बात की है । शिक्षापत्री में यह सब सरल ढंग से समझाया है । बडी सरलता से सभी मिलना सम्भव नहीं है ।

रे ब्रमाथी कीट लगी जोयुं, जुठउं
सुख जाली ने वगोव्युं ।
मुक्तानंद मन तम संग मोह्यं ..... रे
श्याम तमे साचुं नाणुं .....

महाराज के अलावां कल्याण का कोई अन्य मार्ग नहीं है । जो मिला है उस की कीमत समझनी चाहिए । पूजा हो गयी, दंडवत् हो गया । दर्शन हो गया । वचनामृत में महाराज कहते हैं कि नित्य नयी श्रद्धा रखनी चाहिए । सत्संग में आये उस समय कितनी श्रद्धा थी, प्रतिष्ठा के दिन घनश्याम महाराज में जितनी श्रद्धा थी उतनी ही श्रद्धा प्रतिदिन होनी चाहिए । प्रथम अहमदाबाद में आकर जितनी श्रद्धा से नरनारायणदेव का दर्शन किये थे, एकादशी, पूनम को या जब भी आप दर्शन करते हैं तब मन को पूछना चाहिए कि पहले जैसी श्रद्धा है ? १ वर्ष बाद या २५ वर्ष बाद श्रद्धा में दर्शन के सुख में प्रथम की अपेक्षा बढती हुई या नहीं ? यह स्वयं के मन से पूछना चाहिए । स्वयं को पूर्णकाम नहीं मानना चाहिए, दर्शन में नित्यप्रति श्रद्धा का भावपढता ही रहना चाहिए ।

महाराज दया करके शास्त्र दिये, जिसमें भगवान की चर्चा होने से जितना अधिक विचार किया जाय उतना ही जीव का कल्याण होगा । स्वभाव, प्रकृति सभी हटजायेगी । महाराज ने मोक्ष की बात को सरल कर दिया है । इसी जन्म में इस जीव का कल्याण करना है । यह संसार छोड़कर अक्षरधाम में जाना है । भगवान बहुत दयालु है । महाराज ने कहा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति के सिवाय अन्य कुछ नहीं है ।

जगत का जंजाल पूरा होने वाला नहीं है । महल बनाओ, गाड़ी लो, कुछ भी करो लेकिन भगवान को छोड़कर कुछ नहीं करना है । मंदिर प्रतिदिन जाना, दर्शन करना, संत समागम करना, नित्य भगवान के साथ सम्बन्ध ही हितावह है ।

बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को भगवान नरनारायण देव शक्ति दे, सभी सुखी हो ऐसा प्रभु के चरणों मे प्रार्थना के साथ सभी को आशीर्वाद दिये थे ।

श्री स्वामिनारायण भगवान की आरती का संक्षिप्त ज्ञान

- चौधरी रमणभाई (ईश्वरपुरा)

इस आरती की रचना ब्रह्म निष्ठ संत शिरोमणी मुक्तानंद स्वामी ने परब्रह्म परमात्मा सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु को सम्बोधित करके बनाया था।

इस आरती में इतना तत्वज्ञान भरा हुआ है जिसका संकलन करना बहुत मुश्किल है। फिर भी भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से हमें जितना अर्थ समझ में आया है, उतना वर्णन करते है। जो सत्संगियो को प्रिय लगेगा।

जय सद्गुरुस्वामी प्रभु जय सद्गुरु स्वामी

सहजानंद दयालु (२) बलवन्त बहुनामी -

इस पंक्ति में स.गु. मुक्तानंद स्वामी यह कहना चाहते है कि हमारे इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान महा समर्थ स.गु. के भी गुरुहैं। सहज में आनंद देने वाले श्री सहजानदं स्वामी अति दयालु है। महाप्रतापी अनंत नामवाले श्री सहजानंद स्वामी की सर्वत्र जयजय कार हो।

चरण सरोज तमारा बंदु कर जोड़ी चरणे शीश धर्याथी (२) दुःख नाख्या तोडी -

भगवान अनंत कोटि ब्रह्मांड के नायक अक्षराधिपति हैं। इस लिए इनकी सेवा में सभी देव देवियां रहती हैं। भगवान तो हमारे प्रेम के भूखे है। कारण यह कि भगवान स्वयं प्रेम स्वरूप हैं। इसलिए प्रेम के अन्तःकरण की पुकार से भगवान दुःख को दूर कर देते हैं।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपनी उपस्थिति में ही बहुत मनुष्यों के दुःख को दूर किये थे। परंतु उनके स्वधाम जाने के बाद भी असंख्य लोग के दुःख दूर हुए हैं। इसी प्रकार भविष्य में भी दूर होते रहेंगे। स्वामिनारायण संप्रदाय में उत्तरोत्तर संख्या बढती जा रही है।

नारायण नर भ्राता द्विजकुल तनु धारी पामर पतीत उधार्या (२) अगणित नरनारी -

भगवान श्री स्वामिनारायण के अवतार हैं। नार अर्थात् हृदय, अयन अर्थात्, रहने का स्थान। भगवान सभी के हृदय में हैं। अपने घर में बिजली तो है लिकन जब तक स्वीच चालू न करें तब तक लाइट चालू नहीं होगी। पंखा चालू नहीं होगा। इसी प्रकार भगवान अपने हृदय में हैं जब तक स्वीच स्मी ध्यान चालू नहीं करेंगे तब तक दर्शन नहीं होगा। मन स्मी दरवाजा खोलने पर ही दर्शन संभव है। भगवान नर भ्राता हैं। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति व्यक्ति के भ्राता हैं इसलिए व्यक्तिके हितेच्छु हैं। इसलिए तो भगवान हमारा कभी अहित नहीं करते।

द्विजकुल अर्थात् ब्राह्मण कुल में शरीर को धारण करके पामर - पतीत अर्था पापी लोगों का जिन्हो ने उद्धार किया।

भगवान श्री स्वामिनारायण ने संप्रदाय में एक छोटी सी शिक्षापत्री लिखी है। जिस में आचार्यश्री, साधु, हरिभक्त इत्यादि सभी के धर्म पालन का नियम बताया गया है। इन नियमों के अनुसार जो चले उसके साथ भगवान है और उसीका उद्धार है।

नित नित नौतम लीला करता अविनाशी

अडसठ तीरथ चरणे कोटि गया काशी -

भगवान श्री स्वामिनारायण इस धरती पर जब से आये तब से प्रतिदिन नई-नई लीलायें करते थे। यह लीला सभी के आनंद के लिए थी। भगवान का कभी नाश होता नहीं है, इसिलिए अविनाशी कहा गया है।

भगवान के चरण में अडशठ तीर्थ हैं करोड़ो बार कशी जाने का पुण्य मिलता है। भगवान स्वामिनारायण के दर्शन में ही सम्पूर्ण तीर्थ यात्रा हो गयी ऐसा मानना चाहिए। परंतु दर्शन हृदय के प्रेम से होना चाहिए।

पुरुषोत्तम प्रगट नु जे दर्शन करशे, काल करम थी छुटी कुटुंब सहित तरसे -

भगवान श्री स्वामिनारायण प्रगट पुरुषोत्तम हैं। जिसके दर्शन करने से काल कर्म के बंधन से छूट जाते हैं। स्वयं तो तर जाता हैं साथ ही सम्पूर्ण परिवार को तार देता है। इस संप्रदाय में अनेक उदाहरण हैं कि हरिभक्तों के मृत्यु के समय भगवान का या संत

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५

बात असीम श्रद्धा की

- प्रो. महादेव धोरीयाणी (राजकोट)

सहज आनंद का संदेश श्री सहजानंद स्वामी थे साधूपदेश की महिमा का आकलन नहीं किया जा सकता है । जीवन में प्रलोभन तथा "प्रतिकूलता" के सामने चल रहे जंग में श्री सहजानंद स्वामी के वचनों को किस प्रकार स्वीकार किया जाय, उस के लिए क्रांति के समान स्वामिनारायण सम्प्रदाय की दो पुस्तकें वचनामृत, शिक्षापत्री पर्याप्त है ।

सर्वोपरि श्रीहरि के उपासकों, शिष्यों द्वारा विशुद्ध पुण्य बंध के स्वामी बनने के लिए सदा उपासना एवं साधना करते रहेंगे ।

जीवन में सांसारिक, भौतिक, प्रलोभन या आकांक्षा ओं के सामने हमें झुकना नहीं है । प्रतिकूलता तथा आपत्तिओं के सामने मस्तक झुकाना नहीं है, निराश भी नहीं होना है ।

सम्प्रदाय के इन दोनो अमूल्य ग्रंथों का एकान्तमन से यदि आज चिन्तन करें तो स्तब्ध हो जायेगें । ये पुस्तकें देश विदेश में प्रसन्नता का वातावरण बनाई है । हजारों युवकों को प्रभावित किया है । चित्त को शुद्ध करने का तथा विवेक चक्षु को खोलने का एकमात्र साधन ए दोनो पुस्तके हैं ।

श्रीजी महाराज ने कहा है कि "बडा कौन है" ? जिसकी समझ बडी है वही बडा है" । इस प्रकार विवेक पूर्वक जीवन जीने का मार्ग दर्शक बनकर ये दोनो ग्रन्थ संमाज के लिए अत्यन्त उपयोगी है ।

जीवन में समस्याओं का अन्त नहीं है । शरीर में रोग की समस्या संपत्ति में धनाभाव की समस्या परिचित तथा कुटुम्बीजन में ना समझ की समस्या, संक्षेप में यदि कहा जाय तो सर्वत्र समस्या ही समस्या है। अर्जुन को तो मात्र अठारह दिन तक ही लडना था, परंतु हमें तो रात दिन लडना है । इस युद्ध के मैदान में अपने रथ के दो सारथी हैं (१) वचनामृत (२) शिक्षापत्री ।

जीवन की अनेक विध समस्याओं का समाधान इन दोनो ग्रन्थों से अपने आप मिलजाता है । जीवन में इन समस्याओं के सामने कौन सा अभिगम अपनाया जाय वह स्वयं चिन्तन करने से लभ्य है । आपको समस्या का समाधान तुरन्त ही मिल जायेगा । आश्चर्य तो यह कि जैसे कौआ कोयल की आवाज बोलने लग जाय, इस प्रकार का चमत्कार सर्जक ये ग्रन्थ है जो सदुपदेश द्वारा सर्जन करता है ।

पवित्रता की मूली जो आप टिकाए रखना चाहते है संस्कार के मूल को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो संत समागम एवं सत्संग को प्रधानता दीजिए । आप अपने मन को संकल्प युक्त बना दीजिए । आपके मन में जो खराब संकल्प-विचार आते है तो उसे रोकने के लिए एकमात्र यह ग्रन्थ ही सहायक है । जिसमें ज्ञान विज्ञान विवेक, विचार, सभी भरा हुआ है, इसकी आराधना चिन्तन मात्र से मानवजीवन में एक नयी क्रांति आयेगी । व्यसनों का अपने आप त्याग हो जायेगा । यदि जीवन में अपना होना हो तो संकल्प दृढ करना होगा । प्रलोभन एवं प्रतिकूलता दोनो ही समाज के सामने स्पर्धात्मक हैं ।

दृढ संकल्प के विना मात्र इच्छाओं के सहारे धर्म सेवन या पाप त्याग दोनो ही संभव नही है । इसलिए आज से ही दृढ संकल्प करो कि इन दोनो ग्रन्थों को नियमित वांचन करेंगे, श्रवण मनन निदिध्यासन करेंगे ।

हमारे पास संकल्प बल के साथ सत्वबल का होना जरूरी है । संकल्पबल अपने मर्कट मन को उत्साह शून्य नहीं बनने देगा । हिंमत शून्य भी नहीं बनने देगा । इस के साथ समर्पण बल भी आवश्यक हैं ।

शिक्षापत्री में "व्यसन मुक्ति तथा अहिंसा दी गयी है । जिसके पास उपरोक्त तीनों बल हैं उसे व्यसन मुक्त एवं अहिंसक बनने में सफलता मिलती है । जीवन में संकल्प बल की जरूरत है । प्रचंड सत्वबल हो तथा समर्पण भाव हो तो उसके जीवन में सफलता ही सफलता है ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १

श्री रामानुजाचार्य

- चन्द्रकान्त मोहनलाल पाठक

सत्संगीमात्र को जानने के योग्य गुरु परम्परा है । स्वामिनारायण भगवान ने उद्धव संप्रदाय में गुरु परम्परा का प्रारम्भ रामानुजाचार्य ने किया । रामानुजाचार्य ने रामानन्द स्वामी को दीक्षा देकर आचार्य बनाया । रामानुजाचार्य का जीवन काल इ.स. १०१७ जन्म से इ.स. ११३७ अवसान तक माना जाता है। करीब ८६८ वर्ष पूर्व हो गये है । रामानंद स्वामी का जीवन काल ई.स. १७३९ जन्म से ई.स. १८०२ अवसान तक माना गया है। अर्थात् २०३ वर्ष पूर्व की यह बात हुई । तो रामानंद स्वामी ने रामानुजाचार्य के पास से दीक्षा कैसे प्राप्त किया ? इस का समाधान यह है कि भौतिक रीति से भले ही न शक्य हो, परंतु रामानुजाचार्य स्वप्न में रामानंद स्वामी को दीक्षा दिये थे । जैसे एकलव्य ने दोणाचार्य की माटी की मूर्ति बनाकर धनुर्विद्या प्राप्त की थी । गुरुदेवने उस अबोल प्रतिमा द्वारा प्रेरणा देकर एकलव्य को धनुर्विद्या में अर्जुन के समान कक्षा में रख दिया । सिद्धपुरुष अपने पुरुषार्थ को सामर्थ्य को किसी भी ढंग से प्रदर्शित करते हैं । शिष्य में पात्रता होनी चाहिए ।

रामानुजाचार्य का जन्म तमिलनाडु में पेरम्बुदुर भूतपुरी में हुआ था । माता कांति मती यामुनाचार्य की पुत्री थी । यामुनाचार्य उस समय वैष्णव सम्प्रदाय के प्रतिभावंत आचार्य थे । श्रीरंग पीठ पर आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए थे । इतिहास कहता है कि वैष्णव सम्प्रदाय की शुरुआत उसी समय से अर्थात् ९७० वर्ष पूर्व से हुई । पिताजी श्री केशवयजवन थे । उन्होंने पुत्र का नाम लक्ष्मण रखा । परंतु यामुनाचार्य के पुत्र महापूर्णजीने (मामाजीने) रामानुज नाम रखने को सूचित किया । भगवान राम के अनुज अर्थात् लक्ष्मण रामानुज हुए ।

बालकपन से ही पिता के पास वेदाध्ययन किये । भगवान श्रीहरि भी पिता धर्मदेव के पास से वेधाध्ययन किया था । बालकोमे ब्रह्मत्व बना रहे इस लिए उस समय बाल्यावस्था से ही संस्कारो का सिंचन किया जाता था । ब्रह्मत्व ऊर्ध्वगति की शक्ति है । मुस्लिम समाज में आज भी छोटे बालक मदरसा में मजहब के पाठ पढने जाते हैं हिन्दू समाज में कितने छोटे बालक धर्म संस्कार सीखते होंगे ? सोलह वर्ष की उम्र में पिताने रामानुज का विवाह संस्कार कर दिया । बाद में रामानुज कांची गये । यादव प्रकाश नामक विद्वान के पास रह कर मीमांसादिक शास्त्रोकां अध्यनय किये । उन्हीं के साथ मौसीका बेटा गोविन्द शर्मा भी पढ रहा था । रामानुजाचार्य की विद्वता चारो तरफ फैलने लगी यामुनाचार्य भीउनकी विद्या सिद्धि से आनंदित हो रहे थे । श्रीरंगम् पीठ के आचार्य बने ऐसी चाहना करने लगे । उन्होने रामानुज को श्री रंगम् बुलाया । उनके आने से पूर्व ही यामुनाचार्य दिवंगत हो गये । मरने से पूर्व रामानुज के लिए तीन आज्ञा करके गये थे । वेदान्त सूत्र पर भाष्य लिखना, आलवार द्वारा रचित प्रविण काव्य को पंचमवेद के रूप में गौरवान्वित करना, तथा विष्णुपुराण रचने वाले श्रेष्ठ विद्वान पराशर मुनि की समृति बनी रहे - इसके लिए योग्यता वाले विद्वान विप्र को पराशर नाम से सम्मानित करना ।

रामानुज गृहस्थाश्रम छोडकर सन्यास लेलिए । यामुना चार्य के इच्छानुसार श्रीरंगम् पीठ के आचार्य बने । उसी समय से वे रामानुचाजार्य के रूप में प्रसिद्ध हुए । सर्व प्रथम वे गोष्ठिपूर्णजी के पास से अष्ठाक्षर मंत्र को ग्रहण किये । मंत्रदीक्षा लेने के बाद गोष्ठि पूर्णजीने रामानुज को "श्रीमन्नाथ ऐसा दूसरा नाम दिया । जिससे वे श्रीमन्नाथ के रूप में प्रसिद्ध हुए । यमुनाचार्य द्वारा स्थापित सिद्धान्तों का अध्यनन किया । श्रीरंगनाथजी के पीठ की व्यवस्था सम्हाले । वैष्णव धर्म का प्रचार करने के लिए तथा अद्वैत मत के सामने विशिष्टा द्वैत मत को पुष्ट करने के लिए देश के अलग-अलग स्थानों

पर प्रवास किया । अनेक विद्वानो को एकत्रित करके सभा के माध्यम से शास्त्र चर्चा किये । शास्त्रार्थ में पारंगत विद्वानो को परास्त किये । शंकराचार्य के केवलाद्वैत मत का खंडन करके शुद्ध विशिष्टाद्वैत मतका प्रतिपादन किया । ज्ञातिप्रथा के भेदभाव को दूर किया । हजारों स्त्री-पुरुषों को दीक्षा दिया । वैष्णव संप्रदाय में भक्तिमार्ग को पुष्ट किया ।

अपने अनेकविध प्रवृत्तिशील जीवन में भी रामानुजाचार्य ईश्वर भक्ति को कभी नहीं छोडे । हृदय में सतत श्रीहरि का स्मरण रहता । उन्होंने भगवान का साक्षात्कार किया था । गुरु आज्ञानुसार उन्होंने वेदांत सूत्रों पर भाष्य लिखा । श्रीभाष्य के नाम से प्रसिद्ध यह भाष्य विद्वानों में अति प्रतिष्ठित हैं । आलवरों के पद संग्रह को भी वेद का पंचम स्थान दिया । स्वयं के एक विद्वान मित्र को पराशर भट्ट नाम रखकर यामुनाचार्य द्वारा प्रदत्त तीनों कार्य पूर्ण किया ।

श्रीरंगम् क्षेत्र चोल राजा के क्षेत्र में आता था । वह राजा शैव संप्रदाय का था । जिससे वह वैष्णव भक्तों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता था । परिणाम स्वरूप काल स्थिति को समझकर रामानुजाचार्य वह क्षेत्र छोडकर मैसूर राज्य में चले गये । बारह वर्ष तक वहाँ रहे । चोल राजा के देहान्त बाद पुनः श्रीरंगम् आ गये । वैष्णव संप्रदाय की विचारधारा ऐसी थी कि श्री अथवा लक्ष्मी ए भगवान वासुदेव की शक्ति हैं । वासुदेव की कृपा से लक्ष्मीजी को प्राप्त किया जा सकता है । इसी कारण से वैष्णव संप्रदाय "श्री संप्रदाय" के नाम से भी जाना जाता है । वेदान्त सूत्र पर लिखा गया भाष्य भी श्री भाष्य के नाम से प्रसिद्ध हैं । उन्होंने गीता भाष्य वेदांत संग्रह, वेदांत दीप, वेदांतसार जैसे अनेकों ग्रंथ लिखा ।

भगवत् भक्तिमय जीवन जीते हुए मानवीय तृष्णा से रहित, संसार से विरक्त, भगवान वासुदेव का साक्षात्कार करके मुक्त स्थिति को प्राप्त हो गये थे । भगवान की तरह त्रिविध पीडा को दूर करने वाले हो गये थे । परंतु सर्वेश्वर श्रीहरि के विना एक तिनका भी इधर उधर नहीं करते थे । रामानंद स्वामी ने रामानुजाचार्य के पास दीक्षा कैसे प्राप्त किया उसकी घटना इस प्रकार है । सौराष्ट्र में आकर रामानंद स्वामी गोपालनाथ मंदिर में रहते थे । योगनिष्ठ गोपालानंद ब्रह्मचारी के शिष्य आत्मानंद स्वामी के पास से दीक्षा लेकर उन्हीं की सेवा में रहते थे । आत्मानंद स्वामी समर्थ व्यक्ति थे । लेकिन निराकारवादी थे । साकार स्वरूप उपासक रामानंद स्वामी के साथ मेल नहीं खाया । भगवान के साकार स्वरूप का साक्षात्कार जो करावे ऐसे गुरु की चाहना से वहाँ से निकल [illegible] । साकार स्वरूप का प्रतिपादन [illegible] रामानुजाचार्य के सम्प्रदाय श्रीरंगम्क्षेत्र में आये । श्रीरंगनाथ भगवान का दर्शन किया । वहीं रुक गये । श्री भाष्य, गीता भाष्य, इत्यादिग्रन्थों का अध्ययन किया । रामानुजाचार्य की अमृतमयी वाणी स्व प्रपन्नामृत नामक ग्रन्थ का अभ्यास किया । जिससे रामानुजाचार्य के प्रति अनुराग, भक्तिभाव, महिमा रातदिन उन्हीका स्मरण होने लगा ।

एक दिन उनकी खुशी का पार नहीं था । उनका स्वप्न साकार हो गया । चैत्र शुक्ल पंचमी का दिन था । रामानुजाचार्यजी का जन्मदिन था । उसी दिन प्रातः काल स्वप्न में रामानुजाचार्य ने साक्षात् दर्शन दिया और कहा "रामानुजाचार्य मवेहि माम् वरं वरय" हे शिष्य । मैं रामानूजाचार्य हूँ । आपकी भक्ति से प्रसन्न होकर आपको दर्शन देने आया हूँ । आपकी जो इच्छा हो मांगो रामानंद स्वामी गुरु के चरण में गिरकर कहने लगे कि हे गुरुदेव आप ऐसी कृपा करिये कि श्रीहरि का साक्षात् दर्शन हो सके ।

रामानुजाचार्य ने रामानंद स्वामी को वैष्णवी दीक्षा दी । दो मंत्र दिया । इसी मंत्र का जप करना बाद में भगवान का दर्शन होगा ।

इतना कहकर तुलसी की कंठी गले में पहना दिये । जप माला दिये । ऊर्ध्वपुंड्र - तिलक करके उसकी विधि बताये । अब आप मेरे द्वारा आचार्यपद को प्राप्त किये हैं । इस लिए जो भी शरण में मुमुक्षु आये

उसे दीक्षा देना । इस प्रकार कहकर अन्तर्ध्यान हो गये । रामानंद स्वामी जब जागे तब उनके कंठ में तुलसी की माला ऊर्ध्वपुंड्र तिलक अपनी शरीर पर देखे । और भाव विभोर होकर गुरु की आज्ञा मानकर लोक कल्याण मे प्रवृत्त हो गये ।

रामानुजाचार्य के विषय में संशोधन करने वाले विद्वान लोग नये नये विचार व्यक्त करते हैं । पिता केशव पेरुमल सोमैयाजी तथा माता कांथीम से अमाल के आंगन में जन्म हुआ । बालक के मुख की दिव्यता देखकर उनका नाम इल्या पेरुमल रखा । इल्या अर्थात् लक्ष्मण से बलराम हुए । किलयुग में रामानुज के नाम से प्रसिद्ध हुए । वाल्यावस्था में पिता का अवसान हुआ, वे भी एक समर्थ विभूति थे । भगवान वरदराज के साथ वात करते थे । सोलह वर्ष की उम्र तक सभी वेद, पुराण, उपनिषद् इत्यादि शास्त्रों को पढ लिए थे । इसके बाद ताजामांल नाम की कन्या के साथ विवाह हो गया । इसके बाद यादव प्रकाश नामक विद्वान से मीमासादि ग्रन्थों का अध्ययन किया । रामानुज विशिष्टाद्वैतमत के समर्थक होने से उनके गुरुने समझा कि यह अद्वितीय विद्वान है, अतः अद्वैत मत का खंडन करेगा, इसलिए गंगाजी मे डुबाकर मारने का प्रयाश किया । परंतु उनका एक मित्र उन्हें डूबने नहीं दिया । रात के अंधेरे में जंगल में छिप गये । वहाँ एक वृद्ध शिकारी दम्पती ने सहायता की । उसी समय वे समाधि में बैठ गये जब आंख खोले तो कांची मेंअपने को पाये । बाद में उन्हें ख्याल आया कि उनकी रक्षा शिकारी के वेश में भगवान बरदराजन् तथा पेरुन्न देवी ने किया ।

रामानुज का संसारी जीवन दुःखी था । पत्नी के साथ बनता नहीं था । पत्नी उन्हें पहचान नहीं पाई । परिणाम स्वरूप झगडा करती । श्रीरंगम् की गादी को स्वीकार ने से पहले तीन रहस्य मंत्रो को जानना आवश्यक था । लेकिन मंत्र जानने वाले आचार्य मंत्र बताते नहीं थे । अंत में मंत्र इस शर्त पर दिये कि सत पात्र को मंत्र देना अन्यथा नर्क में जाओंगे । रामानुज तो लोक कल्याण को मानते थे । मांगने वाले मुमुक्षुओं को मंत्र देने लगे । मंत्र देने वाले आचार्य ने स्पष्टता मांगी । तो उन्होंने कहा कि भले ही नर्क में जायेंगे लेकिन हमारे शिष्य तो स्वर्ग में जायेंगे । इस प्रकार की उदात्त भावना से आचार्य भी प्रसन्न हो गये ।

तिरुमलाई में रामानुजाचार्य का मंदिर है । इस मंदिर में स्वयं की मूर्ति प्रतिष्ठित किये हैं । ई.स. ११३७ में वे अन्तर्ध्यान हुए । इस लोक में १२० वर्ष तक रहे । उनकी भौतिक शरीर का दर्शन करने के लिए श्रीरंगम् मंदिर में आज भी सुरक्षित रखा गया है । यह सभी को ख्याल नहीं होगा ।

पृष्ठ ६ से आगे

बात असीम श्रद्धा की

वचनामृत तथा शिक्षापत्री अपने संकल्प को पुष्ट करने में सहायक होती है । प.पू आचार्य श्री तथा संत इस बल को चिर स्थायी करने के लिए देश -विदेश विचरण करते रहते है । आध्यात्मिक क्षेत्र में सद्गुणों को सजो रखने के लिए राजमार्ग एक मात्र यही है ।

नीति मत्ता के लिए जागरुक होना आवश्यक है । जिसके जीवन में निष्ठा, जांगृति तथा पुरुषार्थ होगा तो अवश्य कोई अदृश्य शक्ति सहायक बनेगी । ए दोनो पुस्तकें शांतिदायक, सुखदायक, प्रसन्नतादायक समाज के लिए है ।

"काले काले समाचरेत्" जिस समय जो करना हो उसे कर लेना चाहिए । जो नहीं करने लायक हो उसेनहीं करना चाहिए । हम सभी हरिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो के ऋणी हैं । कारण यह कि उन्होंने सदुपदेश के इस मंगल कार्य को हितकारी, प्रीतिकारी, मंगलकारी मानकर कभी विराम नहीं दिया और आज भी विना विराम के अविरत गति से सत्संग समाज के उत्थान में अपना सम्पूर्ण समयन्यौछावर किये रहते हैं यही अहोभाग्य है ।

• • • • •

भक्ति

नटवरलाल बाजीदास पटेल (ग्राम विहार)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने स्व हाथो से लिखी शिक्षापत्री मे ज्ञीन, वैराग्य, भक्ति, धर्म इत्यादि के विषय में स्पष्ट लिखते है- कि

श्रुति-स्मृति द्वारा प्रतिपिदित सदाचार को ही धर्म समझना चाहिए। भगवान श्री कृष्ण की केवल भक्ति करनी चाहिए। (शि. श्लो. १०३) भगवान श्री कृष्ण के विना अन्य में प्रीति न हो तो उसे वैराग्य. समझना चाहिए। जीव-ईश्वर माया तथा उसके स्वरूप को यथार्थ रूप से जानना ही ज्ञान है। (शि. श्लो. १०४)

स्वामिनारायण भगवानने उपरोक्त शिक्षापत्री श्लोक नं.१०३-१०४ के अनुसार धर्म भक्ति ज्ञान वैराग्य को सच्चे अर्थ में समझकर जीवन में उतारने की वात कही है।

बेद उपनिषद श्रुति -स्मृति तथा सभी शास्त्रो का सार धर्म शास्त्र ऐसा सत्संगी जीवन के द्वितीय प्रकरण में सर्वोपरी सर्व अवतार के अवतारी, सर्व कारण के कारण, निर्गुण परब्रह्म ऐसे श्री सहजानंद स्वामी ने अपने अनन्य भक्त सूरत के श्री भालचंन्द्र शेठ को कहा कि हे भक्तो आज की इस सूरत की सभा में आप लोगो को जो भी प्रश्न पूछना हो पूछिये। उस समय बुद्धिमान भालचंन्द्र ने पूछा कि हे भगवन् भगवान की भक्ति समग्र बन्धन को काटने वाली है इसी सन्दर्भ में पूछता हू। (१)भक्ति कितने प्रकार की है। (२) उस भक्ति का आश्रय लेने वाले भक्त का क्या स्वरूप है। (३) प्रत्यक्ष श्री हरी में ऊन भक्तो की प्रीति कैसी होनी चाहिए ? इन सभी प्रश्नो के विषय में आप बतायें।

भालचन्द्र के प्रश्न को सुनकर श्री हरि ने कहा कि हे वैश्यवर। आपके प्रश्नो के उत्तर भगवान की कृपा विना विद्वान भी नहीं दे सकते हैं। इस विषय में मैं बताता हूं। इस लोक में मनुष्य को चाहिए कि प्रथम धर्म भक्ति से युक्त गुरु के पास से भागवती दीक्षा लेकर उन्ही से भगवान की मूर्ति प्रसादी कराकर उसी की सेवा भजन करनी चाहिए। भगवान में प्रेम सहित अखंड वृत्ति होतो उसे भक्ति कहते हैं।

श्री हरि की कथा का श्रवण, कीर्तन, दासत्व, भगवान के साथ सखा भाव, आत्म निवेदन, यह भक्ति का नवप्रकार हैं। इसी नव भक्ति से परमेश्वर को प्राप्त किया जा सकता हैं तथा इच्छित फल प्राप्त किया जा सकता हैं। निष्काम भक्त मुक्ति को प्राप्त करते हैं। भगवान के साथ जो निष्काम भक्त हैं या सन्त हैं वे भगवान की मूर्ति के साथ साक्षात बात करते हैं। निष्काम भक्त अष्ट सिद्धि तथा नव निधि की चाहना भी नही करते हैं। फिर भी भगवान देवताओं को अप्राप्य जैसे अक्षरधाम का वै भव प्रदान कर देते हैं।

हे भालचन्द्र ? भगवान में अखंड प्रीति परायण साधुजन के समागम से भक्ति की दृढता निरन्तर करनी चाहिए। भक्ति करने में प्रेम वाला तथा भक्ति की दृढता न हुई हो, ऐसा भगवान का भक्त कभी कुसंग के योग से भक्ति से च्युत हो जाते हैं। फिर भी भक्ति कभी व्यर्थ नहीं होती हैं। दूसरे जन्म में भक्त उसी भक्ति को प्राप्त करता हैं। इसलिए विवेकी भक्तजन सत्पुरुषो के वचन में विश्वास रखकर प्रभु में प्रेम करना चाहिए। जो भक्त हों वे अपने से अधिक भक्ति ज्ञान वैराग्य वाले को नमस्कार करें। गरीब भक्तो को माता पिता की तरह आदर से बुलायें। साधुओ के प्रति आदर भाव रखें। स्त्री का लोभी, पाखंडी, व्यसनी, क्रोधी,लोभी, दूसरे के धर्म का पालन करने वाले ऐसे व्यक्तियो के संग का परित्याग करना चाहिए।

हे भक्तजन। श्री हरि की इच्छा से जो कोई व्रत,तप, नियम, तथा धर्म का पालन करते हैं। वह व्रत,तप, इत्यादि भक्ति की वृद्धि करने वाला हैं। चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करने के बाद मनुष्यों को यह शरीर जो देवताओं को दुर्लभ है भगवत् कृपा से मिली है तो विषय से विरक्त होना तथा भगवान में स्नेह करना ही इसका फल है।

है भालचन्द्र शेठ ? इस प्रकार जिन भक्तो को भगवान के साथ प्रेम के साथ भक्ति होगयी हो, उन्ही को भगवान का प्रेम मिलता है। उन्हीं के मनोरथ भगवान पूर्ण करते हैं इस जन्म में अथवा अनेक योनियों में भटकने के बाद भी भगवान के धाम की प्राप्ति

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १२

श्रीहरि व्यावक सर्वत्र समान

- गोरधनभाई शंकरदास पटेल (सोजा)

जयश्री स्वामिनारायण .....
महामंत्र के जाप के साथ सबने -
हरिनी मरजादामां रहे नित्य रे,
धर्मनियम पाळे स्डी रीते रे।
लोपे नहि आज्ञा लगार रे,
वाले प्रभु वचन अनुसार रे॥
होय आज्ञाकारी अंग रे,
केदिन करे आज्ञाने भंग रे।
एवाथी थाय कल्याण रे,
कही बीजाथी सांभण्या सुजाण रे॥
मत्स्य प्रभुनां मत्स्य ज कहीये रे,
तेथी कहो कल्याण केम लडिये रे॥
मारे तोणी तपासवुं वेपे रे,
कल्याण प्रभु के प्रभुने मळेल रे।
तेह विना कल्याण काचुं रे,
कहे निष्कुलानंद ऐ साचुं रे॥

(कल्याण निधि - निर्णय ० ४)

श्रीहरि की आज्ञा का पालन ही उपासना का शुद्ध स्वरूप है इसलिए स.गु. निष्कुलानंद स्वामी के वचनो का पालन करके हमे अक्षररूप उनकी पंक्ति में मिल जाना है और अक्षरधाम में जाकर अखंड भगवान की सेवा में प्रस्तुत रहना है। ऐसा संकल्प का जो लोप करता है वह सुखी नहीं होता इसलिए त्यागी और गृहस्थ हरिभक्त को धर्म का आचरण श्रीहरि की आज्ञा का पालन करना चाहिए। परंतु बाधा आने पर आगे पीछे नहीं होना चाहिए और श्रीहरि की आज्ञा, "स्वधर्म को मेरे आश्रितजन कभी त्याग न करे, अक्षर ब्रह्म के साथ अपनी आत्माकी एकता करनी चाहिए। भगवान के अलावा किसी भी प्रकार के पदार्थ में प्रीति रखनी नही चाहिए दिव्य पुंज में बिराजमान दिव्यमूर्ति वासुदेव श्री स्वामिनारायण भगवान के लिए भक्ति करनी और उनका माहात्म्य जानने के लिए सत्पुरुषो की सेवा करनी। (स.जीवन, प्रक. ५, अ-५५, श्लोक-२८) और उनके जीवनका रहस्य भी ज्ञान हैं। इसलिए शास्त्रमें सत्पुरुष का समागम ही मोक्ष का द्वार हैं ऐसा कहाँ गया हैं। पुरुषोत्तम नारायण की दृढ उपासनावाले शास्त्र का अंत:करण और अनुभव से जानकर, और ज्ञान के विषय दृढ स्थितिवाले भगवान द्वारा बांधी हुई संप्रदाय की धर्म मर्यादा में अखंड वर्तनकरने वाले सत्पुरुष को पहचानकर उनका समागम करना। इससे ही स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी भी कहते हैं :

"श्रुति स्मृति सब ही मील
गावत संत समागम सार,
भवसागर तरवाने कारण
जीव रच्यो करतार."
मायानो जन तो ज मटे,
जो हरिजन शरणे जाय,
ब्रह्मानंद कहे वार न लागे,
तरत जीव सिव थाय,
महावद पामी रे, पाछो
के दि न वणे."

इसलिए सच्चे संत भगवान के स्वरूप में जीव को जोडते हैं। इसलिए श्रीहरि ने कहा हैं कि "मेरी आठ प्रकार की दो प्रतिमा है उसमें मैं अखंड निवास करके रहता हूँ।" (ग्र.प्र. ६८) इसलिए श्रीहरि की शिक्षापत्री की आज्ञा ध्यान में लेकर सत्संग करना चाहिए।

यह रही वह आज्ञा :-

भक्ति वा ज्ञानमालम्ब्य
स्त्रीद्रव्यरसलोलुभाः
पापे प्रवर्तमानाः स्युः कार्य स्तेषां न
संगमः ॥२४॥

प्रभु पद की प्राप्ति के लिए निर्मानी स्वभाव रखकर श्रीहरि की आज्ञा के अनुसार धर्मकुल आश्रित आचार्यो संतो की चरण की रज में बैठने का आग्रह मेंगणीके राजा मानसिंह जैसा सदाकाल रखेंगे तो परमानंद परमात्मा की शुद्ध उपासनावाले सत्पुरुषोकी दृष्टि पडने से जीवात्मा संत के समागम से शुभ, संस्कारी, सदाचारी धर्म ज्ञान और ध्यानमूर्ति जैसे भगवान का एकांतिक भक्त बन जाते हैं। नारदजी के समागम से हिंसावृत्ति रखने वाले वालियो भिल्ल वाल्मिक ऋषी हो गये। यह दुनिया (जगत) में विदित हैं। और कलिकाल में जोबनपगी जैसे लूंट, चोरी खून करनेवाला संत समागम से सत्संग में श्रीहरि का सदाचार करने से धर्ममें जूडे रहने से सबका आदरपात्र भक्तराज बन गया। और कमढियां गाम के मुसलमान सिन्धी क्रूरतासे मूर्ति समान कायाभाईका संतसमागम हुआ तो निर्दयी जीवात्मा ध्यानी मूर्ति, निर्मानी मूर्ति के समान सबका आदरपात्र भक्तराज बन गया। इन सब बातो का रहस्य संतसमागम में समाया हैं। देखिए तो कैसे निर्दयी थे परंतु श्रीहरि के संतो के समागम से वे लोग कैसे निरमल

बन गये। एक समय की बात है। दिन में लाखो रुपये - सोना - चांदी की चोरी करनेवाला जोबनपगी श्रीहरि और संत के साथ आणंद शहरे में से जा रहा था। जिसका नाम सुनते ही लोग डरते उस जोबनको श्रीहरिने सिर पर कपडा (वस्त्र) रखकर अपना मुख बताये बिना आणंद के बाजार में से बहार जाने की आज्ञा दी थी। उस समय श्रीहरि के संतो पर धूल-पत्थर लोगो ने फेंका। परंतु जोवन का आज से संत समागम होने के कारण क्रूरताका जीबन मर गया है। और उसने श्रीहरि को कहा, "प्रभु मेरे मुख में से वस्त्र दूर करने की आज्ञा दीजिए।" उसी समय क्षमा के मूर्ति समान श्रीहरि "जोबन को क्षमा और धैर्य की मूर्ति" बनाकर कहा की - क्षमा ही साधु का धर्म हैं। और जो भगवान का भक्त होता है उसे जितना दुःख होता है वही तुच्छ पदार्थ के समान भगवान की आज्ञाका उलंघन करके होता हैं। जितना सुख मिलता हैं वह भगवान की आज्ञा पालन करने में मिलता है। (ग.प्र. ३४)

कायाभाई एक समय हरजी ठक्कर के साथ गढपुर मंदिर के चोक में बातें कर रहे थे उसमें अचानक पीछे हो गये कायाभाई का पैर कुत्ते की पूंछ पर पड गया। पूंछ दब गई और कूत्ते ने चिल्लाना शुरु कर दिया तब कायाभाई करुणा दृष्टि से कूत्ते को दंडवत् प्रणाम करने लगे, हरजी ठक्करने पूछा, "यह क्या हैं? तब कायाभाई ने कहा, "यह कुत्ता चाहे पशु हो परंतु पूर्व में महान संस्कारी जीव होना चाहिए। जिससे मंदिर में श्रीहरिकी तथा संतोकी चरण रजमें आकर बैठता हैं, इसलिए उसका अपराध या द्रोह क्यों हो? श्रीहरिने वचनामृत में कहा है," संतसमागम से क्रूर, घातकी जीव परंतु दयालु पवित्र और सर्व में पूजनीय बुद्धिवाले परम एकांतिक भक्त हो जाते हैं। इसलिए तो संत समागमकी महिमा शास्त्र में गायी जाती हैं।

"गंगा पापं शशी तापं दैन्यं
कल्पद्रुमस्तथा।
पापम् तापम् च दैन्यं च हन्ति साधु
समागमः॥

श्रीहरिने भी कहा है, भगवान के भक्त का द्रोह करने से प्राणका नाश होता हैं। इसिलिए किसी की निंदा प्रशंसा न करके." श्रीहरि के गुणगान करने का नियम लेना चाहिए इसमें श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त होती हैं।

पृष्ठ १० से आगे

भक्ति

भक्ति के बिना सम्भव नहीं है। जो पुरुष स्त्री के कटाक्ष रुपी बाण से प्रभावित नहीं हुआ है और क्रोध रुपी रात्रि में जगता रहेता है; उसी पुरुष को प्रभु में प्रीति होती है। बालक, स्त्री, दर्पण, अपने देह के सम्बन्धी,जन, राग, मादक वस्तु तथा होली के दिन रंग का खेल, इन आठों में जिसके चित्त न रहें, केवल भगवान में मन हो तो ऐसे भक्त की चरणरज देवता भी चाहते हैं। जो पुरुष ऐसे संत को छोडकर दूसरे को गुरु बनाते हैं तथा पूजते हैं उनमें तथा अन्य में कोई अन्तर नहीं हैं।

हे भक्तों। भक्ति के विषय में आप सभी सुने। मोक्ष के लिए भक्ति को ही श्रेष्ठ साधन बताया गया है। अन्य साधन तो उसके सहायक हैं। परमात्मा को साकार माननें वाले सभी संप्रदाय भक्ति को ही सर्व श्रेष्ठ मानते हैं। स्वयं अक्षराधिपति स्वामिनारायण भगवान के हृदय की बात देखें तो यही स्पष्ट होता है कि मात्र भक्ति ही प्रभु को तथा मोक्ष को देने की एक साधन है।

श्री स्वामिनारायण भगवान तो कहते है कि भक्ति से युक्त भक्त तो मेरा हृदय हैं। वह मेरे लिए मेरे प्राण से भी प्यारा है। ऐसे भक्तो के हदय में मैं अखंड रहता हूं। श्री हरि वचनामृत मे भी सर्वोपरि बतायें हैं। गढडा मध्य के दशम (१०) वचनामृत में कहते हैं कि ज्ञान वैराग्य में एक विशेष रहस्य छिपा हुआ है। लेकिन भक्ति अपनें में पूर्ण है। मध्यके ३२ वें वचनामृत में कहते हैं कि आत्मनिष्ठा, वैराग्य, तथा धर्म सभी भक्ति के सहायक हैं। केवल भक्ति हो तो भी मनुष्य माया से तरजाता है और उस जीव का आत्यन्तिक कल्याण हो जाता हैं।

लोया के १६ वें वचनामृत में कहते हैं कि भगवान के माहात्म्य के साथ जो भक्ति करते हैं उनके सभी दोष हट जाते हैं। उन्हे यदि ज्ञान वैराग्य तथा धर्म न हो तो भी भक्ति के बल से सभी मिल जाता है।

हे भक्तो? भागवत जी के माहात्म्य के प्रथम अध्याय में नारद जी ने कहा है कि जिसके हदय में भक्ति निवास करती है उन्हे स्वप्न में भी यमदूत दिखाई नहीं देते हैं। ऐसे भक्तो को भूत प्रेत भी स्पर्श नहीं करते है बल्कि डरते हैं। भगवान किसी अन्य साधन से वश में नहीं होते है; केवल भक्ति से ही वश होते हैं।

सत्संग की चाहना

- कनुभाई सी. मोदी (हिंमतनगर)

मनमें निष्ठा हो तो जीवन में परिवर्तन हो सकता है। चाह के विना इस जगत में कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। हमें पैसे की जरुरत हो पैसे वाले की चाहना होगी। जीना है तो भोजन की जरुरत होगी इसी प्रकार आत्मा का कल्याण करना हो तो सत्संग की चाहना तथा भगवान की चाहना रखनी पडेंगी। श्रीजी महाराज ने लोया के तीसरे वचनामृतमें कहा है कि "मेरा स्वभाव कैसा था ? तो गोदोहन मात्र एक स्थान पर नहीं रहते थे ऐसे त्यागी भी थे। वैराग्य अतिशय था तथा श्री रामानंद स्वमी के उपर प्रेम बहुत था। फिर भी रहने की चाहना हो तो खंभे को बांहमें भरकर स्थिर रहना पडेगा। इस प्रकार मयाराम भट्ट ने आकर कहा था उसी समय मैं खंभे को बांह में भर लिया। तब उन्होंने कहा कि आप मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा में रहिए बाद में मै नव महीने तक मुक्तानंद स्वामी की आज्ञा में रहा।

सद्. निष्कुलानंद स्वामीने भक्त चिन्तामणी में कहा है कि -

केतु हेतु संत के रहत पवन आधार।
तैसे संत शिरोमणी चलत आज्ञा अनुसार॥

प्रत्येक मंदिर के शिखर पर ध्वजा सबसे ऊंची होती है। वह पवन की आज्ञा में रहती है। इसलिए जिसे भगवान को प्राप्त करना है वे सत्संग की चाहना करें।

नाव के कागडो गति भई मोरी
जहां देखु तहाँ जलनिधिखारा
मेरे तो एक तुमहि अधारा

- सद्. मुक्तानंद स्वामी

एक स्टीमर में खजूर भरा था जिसके लालच में एक कौआ स्टीमर के वांस पर बैठा रहा, स्टीमर (जहाज) किनारे से चल दिया। लेकिन कौआ जहाँ का तहाँ बैठा रहा। जहाज बीच समुद्र में पहुंच गया। कहीं किनारा दिखाई नहीं दे रहा था . कोई वृक्ष या पहाड या किनारा हो तो वह कौआ पुनः वापस आकर बैठे, लेकिन ऐसा तो था नहीं उडता पुनः आकर वहीं बैठा जाता था। अब उसका कोई अन्य सहारा नहीं था,. एक मात्र जहाज का वह वांस ही सहारा रह गया। इसी प्रकार केवल भगवान की शरणागति स्म एक मात्र सभी के लिए आधार है। भगवान ही एक मात्र सभी के लिए गति हैं। कौआ को जहाज की चाहना है। इसी तरह हमें भी भगवान की चाहना होनी चाहिए। ऐसी यदि चाहना हो जाय तो जीव का कल्याण हो जाय।

श्रीजी महाराज के समय में ५०० पहमहंस तथा दूसरे गृहस्थ हरिभक्त क्या किये थे ? वे श्रीजी महाराज के वचन पर न्यौछावर कर दिये। कोई भी अपने मन का नहीं किया। वे लोग सर्वकर्ता हर्ता परमात्मा को पहचान गये थे। जो भगवान को जान लिया हो उसे सुख दुःख में दूसरा संकल्प होना ही नहीं चाहिए। जगत में सभी जीव कर्ता वन जाते हैं। जिसके लिये टाईम टेबल बनावे, काम को बांट दे। एक सुई बनाने का कार खाना देखे तो उसमें कितने आदमी काम करने वाले होते हैं। विद्यालय में या किसी भी जीवन क्षेत्र में देखे तो सभी अपने को कर्ता मान वैठे हैं। लेकिन यथार्थ स्म में अनंत कोटि ब्रह्मांड के एक ही कर्ता हैं। वही पुरुषोत्तम नारायण भगवान स्वामिनारायण हैं। इनके अलावां कोई स्वतंत्र नहीं है।

भगवान कितने दयालु है, वे कृपा करके भक्ति तथा मुक्ति दोनो साथ मिले ऐसा मार्ग प्रवर्तित किया। वे जानते थे कि मुमुक्षु तो देह की सुख की सानुकुलता भी मांगेगे ही। अर्थात् दोनो की सानुकूलता कर दिये। शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करने में सुख है। ऐसा आशीर्वाद दिया। बाद में श्राप भी दिया कि शिक्षापत्री के प्रतिकूल वर्तन करने वाले इस लोक तथा परलोक में दुःखी होंगे। अपने को एक ही विचार करना चाहिए कि आज्ञा के विरुद्ध कोई आचरण हो तो नहीं रहा है। शिक्षापत्री के अनुसार यदि वर्तन करेंगे तो जगत के लिए सुखी होंगे और देह सुख के लिए प्रार्थना नहीं करना पडेगी। प.पू. लालजी महाराज श्री के यज्ञोपवित संस्कार के समय पू. गादीवाळाने भिक्षा में पू. लालजी महाराज को "शिक्षापत्री" देकर उच्च भावना का परिचय दिया।

सत्संग सुरभि : "भवजलना दोणां नो कांणे हरिए हात झाल्यो"

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

महाराज का हेतु छिप नहीं सकता। जो इनके साथ रहता है। उसके साथ नित्य का सम्बन्ध होता है। हंसी मजाक को भी सहन करते हैं। कोई गल्ती हो तो माफ करदें। महाराज का ऐसा प्रेम कि जो प्राप्त करे वह तो प्रसन्न होता है, दूसरे को खबर पडेगी क्या ?

इस तरह का प्रेम डांगरवा की जतन बूआ पर महाराज का था। जतन बूआ कणबी कुटुम्ब की थी। घर में गाय भैंस थी जिससे दूध की कमी नहीं थी। जतन बा घर के मनुष्यों की तरह पशुओं की देख रेख रखती थी। दूध दूहने के समय स्वयं बैठती थी। गूंगे पशुओं पर खूब प्रेम था। दूध निकालती जातीं और नाना प्रकार के विचारों को बोलती जाती थी। यह दूध महाराज और संतो के काम कब आयेगा।

संयोगवश महाराज एक बार डांगरवा आये, साथ में संत भी थे। अभी महाराज गाँव के बाहर ही थे कि, करजीसण गाँव के गोविंद पटेल ने महाराज को विन्ती किये कि महाराज ! आपको लेने आया हूँ मेरे मन को प्रसन्न कीजिए। महाराज चारो तरफ दृष्टि किए उनके चारो तरफ डांगरवा गाँव के लोग खड़े थे। इन सभी की इच्छा थी कि महाराज गाँव में पधारें। लेकिन गोविंद पटेल जैसे मनुष्य को छोडकर महाराज का संध किसी प्रकार अन्यत्रजा सकता है, तो महाराज ने कहा कि पटेल अभी रहने दो, हम लोंग डांगरवा के लिए आये है, जो हमे दूध-दहीं से तरबोर करदे उसी के यहाँ जायेगे।

कभी मनुष्य के पूर्व का पुण्य आगे आता है तभी वह पुण्यशाली होता है, ऐसे के यहाँ ही महाप्रभु पधारते है। डांगरवा गाँव के किनारे आकर महाराज ने इस प्रकार जब कहा कि दूध-दही से तरबतर करने वाले के यहाँ हम जायेंगे - यह सुनते ही जतन बा इस अवशर का लाभ ले लिया और कहा कि महाराज ! मेरे घर पधारिये दूध-दही से हम तरबोर कर देंगे। बस हमारे गाँव अब आप पधारकर पावन कीजिए।

महाराज गाँव में पधारें तो अनेक जीवों का कल्याण हो जाय। ऐसी भावना के साथ जतनबा बोल गयी, इसमें कोई आश्चर्य नहीं। जतनबा रोज अनपे हृदय में यही भावना रखकर दूध मथती थीं। कि अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति इसी दूध-दहीं से स्नान करे, आज वह अवशर आ गया है भीतर आनन्द की लहर उठ रही थी -

आवो आवो ने महाराज,
महीडा चाखो ने,
मरा बहु दाडानी कोड,
पूरी करजो ने ॥

इतने में महाराज बोले "यदि घट गया तो फजीहत कर देंगे गाँव-गाँव में यह प्रचार करदेंगे।" जैसे लग रहा था कि महाराज भक्त की परीक्षा कर रहे हों। अपनी ताकात से ऊपर की बात नहीं करनी चाहिए तो भी सत्संग साथ दे या न दे फिर भी जतनबा एक तरफ होकर महाराज तथा संतो के प्रति अपार श्रद्धा होने के कारण बोल गयी थी। जो अनंत कोटी ब्रह्मांड का अधिपति हैं उसे आज तृप्त करना है। इन्हे वापस नहीं जाने देना है।आगे आकर जतनबा ने महाराज को कहा महाराज ! जो अधिक हुआ तो आप की बोली बोला देंगे। सभी लोग आश्चर्य में पड गये। बा की हिंमत देखकर सभी कहने लगे आज जतन बा के हृदय में जो था वह बोल दी हैं। जतन बा महाराज का चरण अपने गाँव में कराया। स्वयं गाँव से घूमकर दूध एकत्रित करवायीं। भोजन बनवायी। महाराज के आगे जाकर कहीं कि संतो की पंक्ति लगवाइये सब कुछ तैयार है। महाराज उठे नहां धोकर वस्त्र बदले। संतो की पंक्ति करवाये स्वयं दूध-दही का घडा हाथ में लिए और दूध-दहीं की लगातार धार गिराने लगे चारो तरफ दूध-दहीं बहने लगा मानो नदी बहने लगी। झरोखे से जतन बा देख रही थी कि महाराज मेरा नाम खराब करने के लिए इस तरह कर रहें हैं।

वे नीचे उतर आयी। कुन्डी में से दोणी भरकर महाराज को देखा तो दोणी का कंठ पकड़लिया और कहा यह सब एकत्रित मैं ने संतो को भोजन के लिए किया हैं गिराने के लिए नहीं। महाराज बाई के भाव को देख रहे थे और घडे को खींच रहे थे। खींचातानी में जीवात्मा परमात्मा की एक झल जैसे दृष्ट हो रही थी। परिणामत घडा फूट गया और ऊपर का भाग रतनबा के

हाथ में रह गया । ऊधर महाराज दूसरी द्रोणी लेकर हंसते हुए दूध-दही परसने लगे । महाराज संतो को दूध दही से तरबोर कर दिया । जतन बा ने महाराज से कहा आप हमारी हंसी क्या करायेंगे । मैंने चार कुंडी और आप से छिपाकर भरवा रखी हूं ।

इस प्रकार पंक्ति में महाराज घूम-धूम कर परसने लगे । सभी कुंडी खाली कर दिए बाद में रतनबा से कहने लगे आपकी हंसी हम करायेंगे । रतनबा महाराज को कहने लगी महाराज अभी चार कुन्डी और है उसे भी आप लेजाइए । आप का ही है न । आपको अर्पण करती हूँ । आपकी दी हुई वस्तु कभी घटती नहीं है । भरपूर भंडार भरा है ।

रतनबा नम्र होकर कहने लगी, महाराज ! मेरी भूल हो गयी । मेरी हंसी आप कराना चाहते है तो आपकी ही होगी । सब कुछ आप के हाथ में अर्पण कर दिया ।

सर्वस्व अर्पण करने के बाद भी भक्त की ऐसी निर्लेपता देखकर महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए । तन, मन अर्पित करके जो पुरुषार्थ करे तो उसमें कभी कमी नहीं आती । परमात्मा का एक आशरा होना चाहिए । चार कुंडी भर कर रखा हुआ ही अपना संचित है । आपत्ति में वही काम आता है । जीवन स्री डोरी भगवान के हाथ में हो और घडा फूट जाय तो भी कुछ घटने वाला नहीं है । मात्र भरोसा भगवान पर होना चाहिए ।

जतन बूआ का निर्माणीपना महाराज को असरकर गया । जतन बूआ आप बर मांगो । बाहर परमहंसो की भीड है सभी लोग भोजन कररहे है, आनंदित हैं इसी समय महाराज बर मागने को कहते हैं । लेकिन जतनबा क्या मांगे । कुछ मन में बैठ नही रहा था ।

जतनबा परीश्रम करतीं और संसार का रथ खींचतीं । जतनबा ने कहा इस घर की अहो भाग्य कि आप इस घर में पधारे यह प्रसंग हुआ । अब आप प्रसन्न हैं तो इतना करिए की मैं दूध-दहीं देती रहूं तो भी कभी घटेनहीं, यहाँ जो रहे उसका कल्याण हो ।

महाराज प्रसन्न होकर कहे ऐसा ही होगा, आप की जो यह कथा सुनेगा उसका भी कल्याण होगा ।

गाँव के नर नारी सभी निवृत्त होकर वहाँ से अपने अपने स्थान पर गये । उपरोक्त संवाद की खबर दो जन को ही थी । "अखूट रहेगा और कल्याण होगा" वीतते समय में आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज डांगरवा आये और प्रसादी का द्रोण मांगे और कहे कि जतनबा आप दें तो सोने में मढाकर भक्तों के दर्शन के लिए रखें जतनबूआ ने कहा "इसका मुझे ख्याल तो है इसके अलांवा और कुछ मांगिए तो दूँ ।

संसार स्री द्रोण के कंठ को जब महाराज ही पकड़े हों कमी किस चीज की ।

पृष्ठ ५ से आगे

श्री स्वामिनारायण भगवान की आरती का संक्षिप्त ज्ञान

का दर्शन हुआ है । यही भगवान की असीम कृपा है ।

भगवान के ऊपर इतना गाढ प्रेम होना चाहिए कि भगवान का स्मरण होते ही हृदय में आनन्द की लहर उठने लगे । अपना हृदय प्रेम से भरजाये, आंखों से आंसू बहने लगे तब समझना चाहिए की भगवान अपने साथ हैं ।

आ अवसर करुणानिधि करुणा बहु कीधी
मुक्तानंद कहे मुक्ति सुगम करी सीधी

आ अवसर अर्थात् इस कलियुग में भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने ऊपर बहुत करुणा करके आत्मा की आत्यंतिक मुक्ति तथा अष्ट सिद्धि को सुगम कर दिया हैं ।

भगवान ने अनेक युगों में अवतार धारण किया हैं । परंतु इस अवतार मेंअपनी सीमा का अतिक्रमण कर गये हैं । कारण यह कि - भगवान स्वयं गरीब - अमीर, धार्मिक-अधार्मिक, पामर, पतीत, पुण्यशाली, पापी इस प्रकार सभी के बीच में रहकर सभी को सुखी किये हैं । यही इस अवतार की विशिष्टता है ।

इस अवतार में भगवान ने जीवों पर कितनी कितनी करुणा की है यह समझपाना कठिन है । इसलिए इस कलियुग में हमें क्या करना है स्वयं को समझना चाहिए । उसी के अनुसार चलना चाहिए ।

भगवान की बताई आज्ञा का पालन करना है । इन आज्ञाओं के पालन में अपना हित है । भगवान के नामों का अखंड स्मरण करते रहने से भगवान अपने से दूर नहीं जायेंगे और एकदिन अवश्य प्रभु का दर्शन हो जायेगा ।

मैं भगवान होऊँ तो किसी की नाक फूटने नहीं देऊँ

- जयंतीभाई के. सोनी (मेमनगर-अहमदाबाद)

प्रिय भक्तो ! महाराज में जिस दिन से मन स्थिर करके सत्संग के नियम रहेंगे उस दिन से सुख का पहाण हो जायेगा । महाराज आज भी सत्संग में प्रगट विराजमान हैं । अखंड हमारे साथ हैं इस भावना से भजन करना चाहिए । प्रत्येक पल में विराजमान है, अपने आश्रितों की रक्षा करते हैं । हमारी भाग्य है कि प्रभु के चरणारविन्द मिले हैं । कितना दुर्लभ है ? जीवन में एक ही बात को दृढ करनी चाहिए - कि निमय, निश्चिय, पक्ष, तीनों से मजबूत होकर श्रीजी महाराज की प्रसन्नता तथा आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता ही आत्यंतिक कल्याण दे सकती है ।

गढपुर में श्रीजी महाराज़ ने अक्षरधाम में जाने का निश्चय करके रोगी हो गये । अनियमित खाना पीना कर दिये, शरीर सूख गयी । इस समय श्रीजी महाराज का दर्शनक रने भायात्मानंद आये तो कहे कि यह कौन सा ढोंक रचे हुए हैं । खा पीकर आनन्द कीजिए हम लोगों को आनंद दीजिए । कदाचित आपधाम में चले गये तो हम लोग भी पीथे से आयेंगे । पुनः स्वामीने कहा आपके पहले पीताम्बर नाम का एक ब्राह्मण भगवान बना था । वह जब शरीर को छोडा तो उसके सत्ताईस शिष्य चिता के साथ जल मरे । इसलिए धाम में जाने का संकल्प छोड दीजिए । तब श्रीजी महाराजने कहा कि "यदि मैं भगवान होऊँ तो किसी की नाक फूटने नहीं दूँ । आयु पूर्ण हो गयी होगी तो भी हम बढा देंगे । इस प्रकार की प्रतिज्ञा करके श्रीजी महाराज ने आचार्य, ब्रह्मचारी, संत, पार्षद, हरिभक्त इत्यादिकी सभा करके सभी के सामने स्वधाम में जाने की बात कहे । यह सुनकर कितने तो वही धरती पर मूर्छित होकर गिर गये । महाराज अपने योगेश्वर के प्रताप से सभी की शरीर में धैर्य को धारण करके सभी को कहने लगे किमेरे पीछे आत्मदाह नहीं करना । यदि कोई निश्चय किया हो तो सभा में से उठकर मेरे पैर को छूकर कहो कि हमारे जाने के बाद मरेंगे नहीं । इस प्रकार श्रीजी महाराज के वचन को सुनकर सभा में बैठे हुए सभी लोग श्रीजी महाराज के चरण का स्पर्श करके कहे कि हम मरेंगे नहीं । उस सभा में सच्चिदानन्द स्वामी के शिष्य सिद्धानन्द स्वामीने भी श्रीजी के पीछे न मरने कीप्रतिज्ञा ली थी । फिर भी सभा में से वाडी गये तब ऊपर का सम्पूर्ण वृत्तान्त गुरु सच्चिदानन्द स्वामी को कह दिया कि कल श्रीजी महाराज स्वधाम जाने वाले हैं । तो श्रीजी महाराज विना हम दोनो कैसे जीवित रहेंगे । श्रीकृष्ण भगवान की पटरानी श्री राधिकाजी को श्रीकृष्ण भगवान का वियोग जब होता तो उनके ललाट से रक्त की धार बह जाती थी । श्रीजी महाराज का वियोग जब हमें होता है तो सारी शरीर से रक्त बहने लगता है, अब हमे क्यां करना चाहिए ? सच्चिदान्द स्वामीने अपने शिष्य सिद्धानन्द स्वामी को कहा कि आपका और हमारा भोजन पात्र लेकर बाग में जाओ और थोरीया का दूध तथा मदार का दूध दोनो पात्रों में भर लाओ । ऐसा गुरुवचन सुनकर दोनो में आज्ञानुसार भर लाये । दोनो गुरु शिष्य उसका पान किया लेकिन महाप्रभु श्रीजी महाराज ने दोनो पात्र के दूध (जहर) को अमृत कर दिया जिससे मृत्यु नहीं हुई । बाद में सिद्धानन्द स्वामी प्रतिदिन के नियमानुसार श्रीजी महाराज का दर्शन करने गये तब श्रीजी महाराज ने कहा कितने भक्त मेरे चरण का स्पर्श करके प्रतिज्ञा किये थे कि हम मरेंगे नहीं तो भी थोरिया तथा मदार का दूध पीकर मरना चाहे । तो क्यां हम आपको मरने देंगे ? नहीं मरने देंगे । सिद्धानन्द स्वामी महाराज को कहे कि यह कार्य मैंने कर दिया अतः क्षमा कर दीजिए । पुनः यह गल्ती नहीं होगी । श्रीजी महाराज ने क्षमा कर दिया ।

बाद में श्रीजी महाराज ने देहोत्सर्ग करने से पूर्व पांडेय श्री रामप्रतापजी महाराज को तथा आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज, रघुवीरप्रसादजी महाराज, मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, नित्यानंद

स्वामी, मुक्तानंद ब्रह्माचरी, भगुजी पार्षद, दादा खाचर आदिक हरिभक्तों को तथा जीवुबा, लाडुबा, आदिक बहनो को बुलाकर अपने संकल्प से सद्गुरु गोपालानंद स्वामी को दोनो देश की मध्यस्थता के साथ दोनो आचार्यो को सौंपते हुए कहा कि मेरे द्वारा स्थापित उद्धव सम्प्रदाय के मर्यादा की रक्षा करना और दोनो आचार्यश्री की सलाह-आज्ञा के अनुसार कार्य करना । इतनी आज्ञा करके सम्वत् १८८६ ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के मध्याह्न के समय स्व माया को समेट कर अक्षरधाम चले गये । बाद में श्रीजी महाराज को विमान में बैठाकर अबीर-गुलाल से अलंकृत करके दोनो आचार्यो ने आरती करके विमान को लक्ष्मी बाग ले गये जहाँ आज मंदिर हैं, वही पर अग्नि संस्कार किया । इस समय दादा खाचर को वियोग न सहन होने से गोपालानंद स्वामीने दादा खाचर को वहाँ से भवन में भेंज दिया । वहीं पर श्रीजी महाराज ने दादा खाचरको दिव्य दर्शन देकर शांन्ति प्रदान किया । बाद में उनसे कहा कि मैं यहाँ से गया नहीं हूँ, सत्संग में अखंड हूँ और रहूँगा । देहोत्सर्ग के दिन बहुत सारे हरिभक्तों को श्रीजी महाराज ने दर्शन दिया था । जो अधोनिर्दिष्ट है -

१. दादा खाचर ने कहा गरीब ने वाज यहाँ से गये नहीं है अहर्निश सत्संग में विराजमान हैं ।

२. गुणातीतानन्द स्वामी को महाराज ने कहा हम गये नहीं है । गोलोक-अक्षरधाम में मैं नहीं हूँ सत्संग में आठो जाम विराजमान हूँ ।

३. मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी कहते कि निंब वृक्ष के नीचे प्रभु लेता अति आनन्द । तेथी ते तस्तल रहे सदाय सहजानंद ॥

४. ब्रह्मानंद स्वामी कहते थे कि - ब्रह्मानंदीश्वर पति लहे न ब्रह्मानंद । ब्रह्मानंद उरे थयो अद्भुत ब्रह्मानंद ॥

५. अमरदालान मेंशुक मुनि कहते - शुक मुनि की चिन्ताटली, अलौकिक आश्चर्य, प्रगट विराजे छे प्रभु आस्थल मां मुनिवर्य ॥

६. अक्षर दालान में मुकुन्दवर्णी कहते - मुकुन्दवर्णी मर्म है समझया ते भली भांत । अक्षर ओरडी ए प्रभु वसे साक्षात् ॥

७. वडोदरा के वैद्यशास्त्री रामचंद्र कहतें - वैद्यराज विस्मित थई उच्चरे मुखथी आम, नाडी देखाडी मने छेतरियो सुख धाम ॥

८. धोलेरा की गरासीया फुली ला कहती - फुलिबा प्रफुल्लित थई गया दुर्गपुर आप । श्याम स्वधाम गया सूली उर उपज्यो परिलाप ॥

९. पीपलाणा की विप्रा लाडुबा कहती - तरत समाधि मां थया लाडुबा इले लीन । अविनाशी अक्षरगया जोई थयु मन खिन्न ॥

१०. पाणवी का भक्तराज पुंजाडोडिया कहते - पवित्र पुंजो डोडियो तेने गरीब ने वाज । गया तेडी दिन तेर में, मध्याह्ने महाराज ॥

११. रामकृष्ण गोविन्द बोलते हुए संत कहते - संत कहे सौ बोलिए रामकृष्ण गोविन्द । ए अवसर आवे सदा स्वामी सहजानन्द ॥

१२. श्री रधुवीरजी महाराज की पत्नी विरजाबा कहती - विरजा बा विस्मित थई, अन्तर करे विचार । प्रगट विराजे छे प्रभु दादाने दरबार ॥

इस प्रकार महाराज देहोत्सर्ग करके इस सत्संग में सदा के लिए प्रत्यक्ष विराजमान होकर आश्रित जनों के सभी मनोरथ को पूर्ण करके अंत में अक्षरधाम प्राप्ति का अक्षय वरदान देते हैं ।

सत्संग समाज को जरुरी सुचना

चराडवा गुरुकुलके संचालक शास्त्री लक्ष्मीनारायणदास तथा स्वामी घनश्यामप्रकाशदास तथा स्वामी अक्षरप्रकाशदास ये तीनो व्यक्तियोने स्वेच्छापूर्वक त्यागी दिक्षा तथा भगवा वस्त्रो का त्याग किया है जिससे मूली स्वामिनारायण मंदिर के त्यागीपंचने उनके त्यागी के सभी हक केन्सल किए है । जिससे वे अब चराडवा गुरुकुल के संचालक भी नहीं है । ट्रस्टके नियम के मुताबिक वे अबसे ट्रस्टी भी नहीं है। जिससे उनके साथ चराडवा गुरुकुल का किसी भी प्रकार का व्यहवार करना नहीं ।

चराडवा राधाकृष्ण गौ सेवा ट्रस्टके ट्रस्टी तथा प्रमुख के स्थमें श्री नरनारायणदेव पीठाधीपति प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अहमदाबाद मंदिरके ट्रस्टी प.भ. श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल की नियुक्ति की है ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

खट्टी छाछ अर्थात् ?

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

अपने संतो ने जिसके लिए 'चारु चरोत्र देश' शब्द का प्रयोग किया है वैसा हरा भरा, वृक्ष और बन से भरपूर दक्षिण गुजरात का विस्तार है। उसमें भी सर्वावतारी, सर्वोपरि स्वामिनारायण भगवान के पदरज से पवित्र और अधिक सुंदर विस्तार के किसी एक गाँव से भगवान जा रहे थे । साथ में भक्ति और शक्ति के समन्वय वाले सुराबापु आदि दश पार्षद थे । सुबह का समय था । सूर्यनारायण की सुनहरी किरण धरती को सुवर्णमयी बना रहें थी ।

गाँव की दहलीज पर भगवान की प्रतीक्षा कर खडे भक्तने भगवान को नमस्कार किया और विन्ती की । कृपा कर घर पधारो, और छाछ पीते जाओ । प्रभुने प्रत्युत्तर देते हुए कहा, भक्तराज ! अभी देर हो रही है । हमे जल्दी वडताल पहुंचना है, और रुकना भी नहीं है, इस प्रकार बोल कर माणकी को दौडा दिया । पार्षद एक दूसरे को देख कर बोले प्रभुने ना बोल दिया लेकिम हम क्या करेंगे ? पेट में तो कबसे कुडकुड हो रहा है और आमंत्रण मिला तो स्वीकार करना चाहिए फिर घोडे दौडाकर भगवान के साथ पहुंच जायेगें ।

वहीं घोडे बाँधकर वे भक्त के घर आये । कभी गुजरात की छाछ का अनुभव नही था । पैर मोड कर पंगत में बैठ गए । तब तास में चार दिन की खट्टी छाछ और चिकना रोटला का टुकडा रंखा और छाछ भर कर दिया जैसे ही रोटला खा कर छाछ पिया तो झटका लगा । सर के सभी बाल खडे हो गए । रोटला चबाया नहीं जा रहा था और भाविक भक्त आग्रह करने लगा थोडा और लीजिए। पार्षद सोचने लगे की इतना खत्म नहीं हो रहा है तो दूसरा कैसे ले ।

जल्दी से जय स्वामिनारायण कह कर निकल गए । घोडे दौडाये और प्रभु के पास पहुंच गए । भगवान ने रमूज करते हुए ब्रह्मानंद स्वामी को कहा, स्वामी ! ये सभी काठी दरबारो के लिए जरा भी जल्दबाजी मत करना । क्योंकि ये सभी छाछ पी कर आये हैं । काठी पार्षदो को उनकी गलती समझ में आ गयी । अंतर्यामी परमात्मा तो सब कुछ जानते थे फिर भी प्रभु के आगे रमूज करने के लिए पगडी उतारी । तो श्रीजी महाराज ने पूछा क्यों पगडी उतार रहे हो ? सर में कुछ हुआ है क्या ? महाराज ! कहने जैसा नहीं है । यह देखो आपको छोडकर खाने गयेतो छाछ इतनी खट्टी मिली की सर के बाल उतर गये । श्रीहरि मंदमंद हंसने लगे । और सभा में सभी को उपदेश दिया ।

मित्रो ! वह उपदेश भी ध्यानमें रखने जैसा है कि जो भगवान को छोडकर खाता है उसे पछताने का वक्त आता है । इसलिए नव वर्ष में एक नियम लेते है कि प्रथम भगवान को भोजन करवा कर बाद में खुद खाना चाहिए ।अपने घर में भोजन बन जाए तो प्रथम ठाकुरजी को भोजन करवा कर प्रसादी का अन्न खुद खाना चाहिए जिससे कभी पछताने का समय न आवे और सदा आनंद और परमानंद रहे ।

इसीलिए प्रेमानंद स्वामीने याद करवाने के लिए लिखा है कि -

"व्हाला ए रसना चाखणहार छाश
ते नव पीए रे लोल"

भगवान के खाने के अलावा भोजन आदि पदार्थ को खट्टी छाछ समझे वही सच्चा भक्त है ।

•

झुका वह शभी को पसंद आया

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक महात्माकी बात है । उनका नाम विश्वामित्र कितना सुंदर नाम है। पुरे जगत के मित्र उनका नाम विश्वामित्र । विश्वामित्र मूल क्षात्र प्रकृति के थे । यानी की क्षत्रिय थे । उन्हे अब ब्रह्मर्षि बनना था । जिद लेकर बैठे मुझे ब्रह्मर्षि बनना ही है । कई महात्माओ ने कहा आप क्षत्रिय धर्म में ही रह कर भजन करो । आपका मोक्ष जरुर होगा । पर माने नहीं उन्होने तप शुरु किया । और

भयंकर तप किया जो उनसे नहीं हो । किन्तु विश्वामित्र ने कठोर तप किया । उनके तप से कई महर्षि प्रसन्न हुएं और विश्वामित्र को कहा कि आपका तप देख कर मुझे ऐसा लगता है कि आप ब्रह्मर्षि बन गए है । लेकिन अभी महर्षि में अग्रगण्य के स्थ में वशिष्ठ है । वे आपको मान्यता दे तो हम माने । विश्वामित्र तप के सहारे वशिष्ठ जी के पास गए । मनुष्य को जीवन में अहंकार ही बाधास्म बनता है । जब तक अहंकार भरा हो तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती और सिद्धि नहीं मिलती ।

जैसे ही विश्वामित्र वशिष्ठजी के आश्रम में प्रवेशे तभी वशिष्ठजी बोले "आवो राजर्षि" विश्वामित्र वहाँ से क्रोधित हो कर चले गए । मेरे तप की कोई किंमत नहीं ? मुझे राजर्षि कहा । अहंकारी मनुष्य कभी अपनी गलती समझ नहीं पाता । विश्वामित्र ने फिर से तप किया । खूब कठोर तप किया । अब तो ब्रह्मर्षि की पदवी मिलेगी ! ऐसी आशा के साथ गए लेकिन ये क्या जैसे ही वशिष्ठजी के आश्रम में प्रवेश किया की विश्वामित्र के सन्मुख देख कर बोले "आवो राजर्षि" विश्वामित्र खूब क्रोधित हुए । इतने तपके बाद मुझे ब्रह्मर्षि की पदवी मिलेगी लेकिन यह आशा पुरी न हुई ।

विश्वामित्र क्रोध में आ गए और उनके आश्रम में उनके बालक शिष्य के साथ खेल रहे थे उनमे से एक को मार दिया । फिर तप किया और ब्रह्मर्षि के सर्टीफिकेट के लिए वशिष्ठजी के पास आये लेकिन ऋषि ने उनको राजर्षि ही बुलाया इसलिए उन्होंने वशिष्ठ के दूसरे पुत्र की हत्या कर दी । ऐसा सौ बार हुआ । वशिष्ठजी के सौ पुत्र मर गये किन्तु वशिष्ठजीने पदवी नही दी । फिर तो विश्वामित्र ने सोचा की इस बुडढे को मार दूँ तो कहानी खत्म हो जाय । सभी मेरे तप को मानते है सिर्फ ये वशिष्ठजी ही नही मानते । इसलिए उन्हे मार देना है और दूसरा कोई उपाय नहीं है । एक रात्रि को विश्वामित्र वशिष्ठजी के आश्रम में छुपे थे । उस समय सभी शिष्य अपनी पर्णकुटी में सो गए थे । सिर्फ वशिष्ठ और पत्नी अरुंधती जाग रही थी । अरुंधती ने बाते करते हुए कहा की देखिये तो आज चांद की चांदनी कैसी खिल गयी है । तब वशिष्ठजी बोले "हाँ, जैसे विश्वामित्र का तप खिला वैसे चंद्रमां की चांदनी खिली है । विश्वामित्र का तप भी इस प्रकार शोभायमान है । आज महर्षि विश्वामित्र को खूब पछतावा हुआ । अरेरे ! मैने जिसके सौ पुत्र मार डाले उसको मेरे प्रति मेरे तप के प्रति इतना सुंदर अभिप्राय विश्वामित्रजी दौड कर उनके चरण में गिर गए । और बोले माफ कीजिए मैने बुहत बडी गलती की है । तभी वशिष्ठजी बोले आओ ब्रह्मर्षि ! सिर्फ एक ही बात से आपको सर्टिफिकेट मिला कि नम्रता, नम्रता ही ब्रह्मर्षि का प्रथम सद्गुण है । जिसके जीवनमें नम्रता है वह ब्रह्मर्षि । कहावत है कि झुके वो सभी को पंसद आता है ।

जीवन में तप का फल, साधना का फल ही नम्रता है । जब तक स्वभाव नहीं बदलता तब तक ऊर्ध्वगति नहीं होती इसलिए भगवान के आगे मान, अहंकार लेकर जायेंगे तो भगवान हमें भक्त का बिरुद नहीं देंगे । इसलिए स्वामिनारायण भगवानने कहा है यदि हमारे धाम में आना है तो स्वभाव को छोडकर शुद्ध मन से आवोंगे तो ही हमे प्राप्त कर पावोगे ।

प्यारे हरिभक्तो को नम्र सूचना

अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा - आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के देश-विदेश में हजारों की संख्या में सभ्य हैं । और उसके लाखों वाचक हैं ।

देश-विदेश में कई लोग अपना घर बदलते हैं । और तब यहाँ कार्यालय में अपना नया पता बताते नहीं है, जिससे अंक पोस्ट द्वारा वापस आ जाता हैं । अथवा अन्यत्र कहीं चला जाता हैं । ऐसे पत्रिका के जो सदस्य हैं वे पडोशी अथवा सगा-संबंधी या मित्रजनों को अपना पता अथवा फोन नंबर बता दे जिससे संस्थाका नुकसान न हो और अंक रेग्युलर मिलता रहे ।

नूतन वर्षका ककारादि अक्षरों का "बालको को बोध

क-	कहता है-	करो याद रोज स्वामिनारायण भगवान को	प-	कहता है-	परीक्षा में ध्यान रखना तो गुण मिलेंगे अपार
ख-	" "	खराब संगत कभीमत करना	फ-	" "	फिरना लेकीन मर्यादा में
ग-	" "	गरम दिमाग कभी मत करना	ब-	" "	बनना सेवा-चाकरी में शूर
घ-	" "	घमंड जीवन में कभी मत करना	भ-	" "	भणतर की कींमत भूलना नहीं
च-	" "	चुगली कभी मत करना	म-	" "	मानवता कभी चूकना मत
छ-	" "	छोडा नहीं कोई तुम्हारा भोजन	य-	" "	यश-कीर्ति मिले ऐसा कार्य करना
ज-	" "	जीवो की हिंसा कभी मत करना	र-	" "	रखडु मत बननां
झ-	" "	झंझावात में आगेपीछे मत होना	ल-	" "	लेशन (गृहकार्य) सदा पूर्ण करना
ट-	" "	टीका करोगे तो दुःख पावोगे	व-	" "	वांचते रहना वचनामृत
ठ-	" "	ठगोगे तो दुनिया ठगेगी	श-	" "	शर्मिंदा कृत्य कभीमत करना
ड-	" "	डुबकी अनजान पानी में मत लगाना	स-	" "	सादाई से रहना
ढ-	" "	ढीले कहीं भी मत होना	ष-	" "	ष्टूकाम बनकर हिंसा नहीं करना
त-	" "	तूफान-मस्ती मर्यादा में करना	ह-	" "	हम है सहजानंदी सिंह
थ-	" "	थींगडावाला कपडा नहीं पहनना	क्ष-	" "	क्षमा मांगना और देना
द-	" "	दोस्ती किसी भी प्रकार निभाना	ज्ञ-	" "	ज्ञानी बनकर सत्य के गुणोको बखानना
ध-	" "	ध्यान करना सरस्वती देवी का			
न-	" "	नमस्कार की जहाँ जरुरत हो वहाँ जरुर करना			

सुख कहाँ है ।

✔	मित्र में है	✕	शत्रुता में नही हैं
✔	सहकार में है	✕	विरोध में नहीं है
✔	क्षमा में है	✕	क्लेश में नहीं हैं
✔	प्रेम में हैं	✕	क्रोध में नहीं है
✔	संतोष में हैं	✕	लोभ में नहीं हैं
✔	समता में हैं	✕	ममता में नहीं हैं
✔	त्याग में हैं	✕	राग में नहीं हैं
✔	प्रसन्नता मैं हैं	✕	चिंता में नहीं हैं

जयश्री स्वामिनारायण

-राजेन्द्रकुमार एस. काछीया

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजका ३४ वाँ प्राकट्योत्सव धामधूम से मनाया गया

सर्वोपरि श्री नरनारायणधेव के सांनिध्य में श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. निवृत्त आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में विजया दशमी के शुभ दिवस पर प्रसादी के सभा मंडप में संप्रदाय के शिर मुकुट प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराज का ३३ वाँ प्राकट्योत्सव धामधुम से मनाया गया । कई महामंदिरो के संत महंत तथा गाँव गाँवके हरिभक्तो ने बडी संख्या में उपस्थित रह कर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को पुष्पहार पहनाकर शुभेच्छा दे कर आशीर्वाद प्राप्त किए थे ।

पू. महंत स्वामी के प्रतिनिधि शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजीने सभा संचालन का काम संभाला था । प्रासंगिक सभा में सर्व प्रथम विद्वान पंडितो ने स्वस्तिवाचन कर शुभेच्छा दी थी । हरिभक्तो ने सामुहिक आरती उतारकर अपनी भावना व्यक्त की थी ।

सभा में पू. महंत स्वामी, पू. पी.पी. स्वामी, पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी, शा.स्वा. गुरुप्रसाददासजी, मूली मंदिर के महंत कोठारी कृष्णवल्लभ स्वामी आदि विद्वान संतोने अपनी भावना प्रवचन में व्यक्त की थी । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को आशीर्वाद दिए थे । कोठारी स्वामी धर्मप्रकाशदासजी, शा.आनंद स्वामी, शा.स्वा. गौरोकविहारीदासजी तथा ब्र.स्वा. राजेन्द्रप्रसाददासजी इस अवशर पर सुंदर व्यवस्था आयोजित की थी । श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ की सेवा प्रसंशनीय रही थी । *- विनोद पटेल*

अहमदाबाद मंदिर में दीपावली का पर्व धामधूम से मनाया गया

काली चौदश : अहमदाबाद मंदिर में बिराजमान श्री कष्टभंजनदेव का पूजनअर्चन आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से धामधुम से हुआ था ।

समूह शारदा पूजन : वर्षो से परंपरागत श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में समूह शारदा पूजन चोपडा पूजन दि. १-११-२००५ को मंगलवार के शाम ६-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के तथा प.पू. बडे महाराजश्री के करकमलो द्वारा विद्वान पंडितो ने वेद-विधि से संपन्न किया जिस में हजारो धर्मप्रेमी व्यापारियो ने भाग लेकर दिव्य लाभ लिया था ।

अन्नकूटोत्सव : इस वर्ष अन्नकूट और नूतन वर्षका प्रारंभ साथ में होने से खूब आनंद सभी में था । परम कृपालु नरनारायण देव की मंगला आरती उतारकर प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को अद्‌भुत दर्शन दिया था । उसके पश्चात सभा में विराजित हो कर नूतन वर्ष का आशीर्वाद दिए थे । बैठक पर बैठ कर लंबे समय तक हरिभक्तों को दर्शन दिए थे । सुबर ९-०० बजे श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में विधिपूर्वक गोवर्धन पूजन और आरती के सभी हरिभक्तों ने दर्शन किए थे । सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज, श्री राधाकृष्णदेव, श्री बाल स्वरूप घनश्याम महाराज, रंगमहोल के घनश्याम महाराज तथा हवेली के घनश्याम महाराज के समक्ष श्रद्धा भाव, प्रेम, पवित्रता से बने छप्पन भोग तथा अन्नकूट बना कर सुंदर सजावट की गयी थी । दोपहर को १२-०० बजे अन्नकूट की आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने उतारी थी । जिसके अद्‌भुत दर्शन हरिभक्तों ने किए थे । संपूर्ण दिन अन्नकूट का दर्शन कर हरिभक्त धन्य हुए थे ।

पू. महंत स्वामी निर्गुणदासजी की प्रेरणा से कोठारी धर्मप्रकाशदास, शा.स्वा. सत्यप्रकाशदास. शा.स्वा. गोलोकविहारीदासजी, स्वामी सूर्यप्रकाशधासजी, स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी, स्वामी विश्ववल्लभदासजी, स्वामी अचलप्रकाशदासजी आदि संतोने खूब सेवा की थी । मूली से प. स.गु. उत्तमप्रियदासजीने अन्नकूट में २४ घंटे सेवा की थी । *- स्वा. सत्यप्रकाशदास*

कांकरिया (रामबाग) मंदिर

नवनरिमाणाधीन कांकरिया श्री स्वामिनारायणमंदिर के शिखर का निर्माण कार्य होते ही महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा कोठारी स्वामी आनंदप्रसाददासजी की प्रार्थना पर विजया दशमी के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पदार्पण करके शिखर के शिला का पूजन तथा सिंहासन का पूजन विद्वानो के वैदिक मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न किया । इसके साथ निर्माण कार्य के

उपस्थित यजमान प.भ. हरिकृष्णभाई ठक्कर, प.भ. गोविंदभाई दूधवाला, प.भ. कांतिभाई पटेल (गामडीवाला) प.भ. जिगरभाई पटेल, प.भ. नटुभाई पटेल (यु.एस.ए.), प.भ. प्रेमजीभाई केराई (केलीफोनिया), प.भ. परीख साहब को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद दिये थे ।

काली चौदश के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री बालस्वरूप कष्टभंजन देव समक्ष मासति यज्ञ सुन्दर रीति से सम्पन्न हुआ । प.पू. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजने स्वहाथों से पूर्णाहुति की थी । इसके बाद सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

लाभ पांचम के शुभ दिन आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित बाल स्वरूप कष्टभंजनदेव का प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने षोडशोपचार के साथ अभिषेक किया । हरिभक्त विशाल संख्या में उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लिए । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पूज्य लालजी महाराजश्री, पूज्या श्रीराजा भी अपने कुल देवता के दर्शनार्थ पधारी थी । सभी को दर्शन, आशीर्वाद का लाभ दिया । महंत स्वामी गुरूप्रसाददासजी तथा को. आनंद स्वामी से सुंदर व्यवस्था की थी । पूजारी देव स्वामीने ठाकुरजी को सुन्दर सजागर दर्शन का लाभ दिया था । महंत स्वामी गुरूप्रसादसाजी तथा को. आनंद स्वामी ने कांकरिया, मणीनगर, इसनपुर, वटवा, घोडासर, महादेवनगर, खोखरा आदि विस्तार की महिलाओं को विशेष लाभ मिले इसलिए महिला सत्संग शिबिर का आयोजन भी किया था । लक्ष्मीस्वरूप गादीवाला भी इस अवसर पर श्रीराजा के साथ पधारकर तथा सांख्ययोगी बहनें भी उपस्थित होकर विशाल महिलावर्ग को भगवत् कथा वार्ता का लाभ दिया था । सभी विस्तारों की अग्रगण्य महिलाओं ने अपने विचारों को प्रस्तुत किया था । श्री स्वामिनारायण भगावन की आज्ञा अनुसार पूज्या गादीवाला के पास से बहुत सारी बहनों ने कंठी धारण करके गुरूमंत्र ली थी । सभा के अंत में पूज्या श्रीराजा तथा पूज्या गादीवालाने सभी को आशीर्वाद दिया था । इस शिबिर में ८०० बहनें उपस्थित होकर विशेष सत्संग का लाभ ली । इस अवसर पर युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । सायंकाल सभी महिलाओं को प्रसाद लेने की व्यवस्था की गयी थी । नूतन मंदिर निर्माण कार्य देखकर पूज्या गादीवाला खूब प्रसन्न हुई थी ।

बद्रीनाथ धाम में २४वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण के प्राकट्य की संकल्प भूमि हिमालय की गिरिकन्दराओं में विशाला के शांति रम्य वातावरण में रहते हुए बद्रीनाथधाम के सांनिध्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर में भगवान श्री स्वामिनारायण के स्वरूप के २४वां प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के शुभ अवशर पर प.पू. निवृत्त आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने अपने वरद हाथों से भगवत् स्वरूप का षोडशोपचार विधि से पूजन अभिषेक किया । जिसके यजमान प.भ. विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल (विशाला ओर्गेनाईजेशन) प.भ. सांकलचंदभाई सी. पटेल (सुपर मार्बल) प.भ. विपीनभाई डी. सोनी प.भ. बाबुभाई बी. पटेल थे । महोत्सव के अंगभूत "श्रीहरिवन विचरण" ग्रन्थ की पारणा का लाभ शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी (नारायणपुरा) महंत ने लिया । अहमदाबाद से प.पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा बहुतायत में संत मंडल पधारे हुए थे । विशाल संख्या में हरिभक्तभी आये हुए थे, जिन्हे कथा तथा तीर्थ का लाभ मिला । महंत स्वामी गोलोकविहारीदासजी अ.नि. शास्त्री विष्णुप्रसाददासजी, मुकुद स्वामी आदि संतोने तथा वासुदेवभाई ने खूब सेवा का कार्य किया । - *प्राणजीवन भगत*

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट

तीर्थोत्तम भूमि श्री नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री, अ.सौ. प.पू. गादीवालाश्री तथा पूज्या श्रीराजा की उपस्थिति में शरद पूनम ता. १६-१०-२००५ को रात्रि में शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिस में संत-हरिभक्तोंने दिव्य रासलीला करके श्रीहरि के द्वारा की गयी राजलीला का स्वरूप उपस्थित कर दिया था । जिसका लाभ धर्मकुल ने लिया । हजारों भक्तों ने दूधपौवा का प्रसाद लेकर जीवन को धन्य समझा था । इस प्रका के उत्सव से सत्संग में नयी प्रेरणा मिलती हैं । - *शा. घनश्यामप्रकाश*

सेटेलाइट वस्त्रापुर में श्री नरनारायणदेव मंडल द्वारा आयोजित भजन संध्या में उपस्थित प.पू. आचार्य महाराजश्री

सेटेलाइट वस्त्रापुर विस्तार में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से विगत वर्षो से सत्संग सभा-भजन का आयोजन प्रति

एकादशी को किया जाता है । महाराजश्री की कृपा से ही इस विस्तार में मूल संप्रदाय के नये आश्रित हुए हैं ।

यहाँ ता. २५-९-२००५ रविवार को एक विशेष भजन संध्या का आयोजन अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की उपस्थिति में संपन्न हुआ । सर्व प्रथम आचार्य स्वस्थ में आये हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री का स्वागत समारंभ, पूजन करके भावुक हरिभक्तों ने अपना श्रेय सिद्ध कर लिया । पूजन-भेंट आरती के यजमान श्री मुकेशभाई (स्वामिनारायण फार्मसी) तथा श्री मनोजभाई (ए.बी. ज्वेलर्स सेटेलाईट) थे । हरिभक्तों ने यह दिव्य लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया । कथा, प्रवचन, धुनि, संतो के प्रेरक व्याख्यान तथा अंत में महाराज श्री का सभी को हार्दिक आशीर्वाद जिससे सभी लोक धन्य-धन्य हो गये थे । सभी भक्तजन प्रसाद लेकर वहाँ से प्रस्थान किये थे । - *संजयभाई सोनी श्री न.ना.देव युवक मंडल सेटेलाई-वस्त्रापुर*

स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा

श्रीजी महाराज की प्रसार्द के दंढाव्य देश में जतनबा के डांगरवा मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से भाद्रमास में अधोनिर्दिष्ट कार्यक्रम हुए थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर वांटो तपलपद में ४८ घंटे की धुनि तथा सत्संगी भाई बहनों ने (वांटो) जेतलपुर, धोलका, धोलेरा, सारंगपुर, गढडा, मूली मंदिर की यात्रा की । करजीसण के प्रसादी के वाघरोडा तालाब में समूह स्नान विधि अमावास्या के दिन की गयी । जहाँ जसु भगत ने सुंदर कथा का लाभ दिया । इस प्रकार यहाँ हरिभक्ता द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ।

- डाभी मफाजी सरदारजी

विसनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से ता. २५-९-०५ रविवार को प्रातः ६-३० से सायंकाल ६-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि विसगनर मंदिर में भाई बहनों ने साथ मिलकर किया । अंत में कनुभाई दर्जीने २२५ दीप वाली आरती उतारी थी । कार्यक्रम सुंदर ढंग से संपन्न हुआ ।

- कांतिलाल आर. पटेल

कर्मशक्ति श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से ता. २७-९-०५ के दिन हरिभक्तों ने साथ मिलकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि किया । यहाँ पर श्री नरनारायण युवक मंडल तथा हरिभक्त प्रति एकादशी को रात्रि में ११-३० तक धुनि करते हैं । एकादशी का पद गान करके महाराज को प्रसन्न करते हैं । *- गोरधनभाई वी. सीतापरा*

जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव सम्पन्न

राजस्थान की गुलाबी नगरी जयपुर में श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान तथा श्री राधाकृष्णदेव का द्वितीय पाटोत्सव श्रावण वद-५ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अ.नि. प.भ. मूलचन्द भाई मगनभाई पटेल के स्मरणार्थे प.भ. मनुभाई मूलचन्द भाई (ओल ईन्डिया गुजराती समाज प्रमुख) परिवार की तरफ से धूमधाम से समप्र किया गया । इस प्रसंग पर समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । जिस में बहुत सारे हरिभक्त भाग लिये थे । प्रातः ६-०० बजे मंगला आरती के बाद वेद विधिसे जेतलपुर के मंहत स्वमीने अभिषेक किया । बाद में महापूजा, अन्नकूट की आरती तथा प्रासंगिक सभा हुई ।

पाटोत्सव प्रसंग पर अनेक राजकीय मेहमान राजस्थान सरकार के गृहमंत्रीश्री गुलाबचन्द कटारीया जैसे पधारे हुए थे । जेतलपुर से महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, मथुरा, छपैया, धरियावद इत्यादि के महंत स्वामीवडताल से गोविन्द स्वामी, जेतलपुर के पुजारी स्वामी, दिल्ही के महंत स्वामी इत्यादि लोग पधारे हुए थे । प्रासंगिक सभा में विद्वान संतो ने प्रेरक प्रवचन किया पाटोत्सव का आयोजन यहाँ के महंत स्वामी देवस्वरूपदासजीने किया । *- के. आर. भगत, जयपुर*

श्री स्वामिनारायण मंदरि कांकरावाडी

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी स्थान केककांकरावाडी गाँव में स्वामी श्री रघुवीरचरणदासजी गुरु स्वामी कृष्णजीवनदासीज की प्रेरणा से हरिभक्तं ने साथ मिलकर श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण का आयोजन किया था । जिसके वक्ता पद पर शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदास अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया था । महुन्दा से शा. हरिजीवनदास तथा इडर से को. सत्यसंकल्पदासजी पधारकर हरिभक्तों को सुन्दर लाभ दिये थे ।

- कोठारी नारायणभाई

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (I.S.S.O., U.K.)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर के संतो की उपस्थिति में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में भाद्रमास में श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुनि का आयोजन किया गया था । प.भ. छगनलाल जादवजीभाई, डॉ. अमरतभाई भीमजीभाई, जयंतीभाई, वसंतभाई, अशोकभाई, तुलसीभाई गोहेल परिवार तरफ से ६ घन्टे की धुनि का आयोनज हुआ । ता. २१-१०-०५ रविवार प.भ. धनजीभाई लक्ष्मणभाई वरु की पुण्य स्मृति में उनकी पत्नी जेठी बहन धनजीभाई के यजमान पद पर उनके पुत्र पुरुषोत्तमभाई रमेशभाई, हरीशभाई, रवीन्द्रभाई, सुभाषभाई, आदि परिवार की तरफ से ६ घन्टे की धुनि का आयोजन किया गया था। बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

- हेमराजभाई चोटलीया

फ्लोरिडा लेकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.S.A.)

लेकलेन्ड के नूतन मंदिर में सर्वोपरि घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, के शुभ सांनिध्य में प.पू.ध.धु. १००८ श्री आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी की आज्ञा से गणेशचतुर्थी तथा राधाअष्टमी के निमित्त ठाकुरजी तथा श्री गणपति महाराज का पूजन अर्चन करके हरिभक्तों ने आरती उतारी थी । इस प्रसंग पर स.गु. शा.स्वा नारायणवल्लभादासजी (वडनगर-गुरुकुल) ने गणेस चतुर्थी तथा राधाअष्टमी की महिमा हरिभक्तो को समझाया, इस के साथ मूल संप्रदाय के सिद्धान्त, नियम, निश्चय, पक्ष, आज्ञा, उपासना के विषय में कथामृत का पान कराया था । सभा के अंत श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुनि करके आरती हुई थी । प.प.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति उत्तम चल रही हैं ।

- प्रमुख श्री नलिनभाई पटेल

(I.S.S.O. वोशिंग्टन चेप्टर) बुवीमेरीलेन्ड

ता. २४-९-०५ शनिवार के दिन सायंकाल ३ बजे सभा में सभी मिलकर कथा-प्रवचन-भजन - कीर्तन वचनामृत वाचन, थाल-आरती इत्यादि करके भगवान श्री स्वामिनारायण को प्रसन्न किया था । प.प.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।- *कनुभाई पटेल*

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु. शास्त्री स्वामी विष्णुप्रसाददास गुरुशा.स्वा. हरगोविंददासजी दि. ४-९-२००५ को श्रीजी महाराज का अखंड, स्मरण करते हुए बद्रीधाम में अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : श्री नरनारायण देव युवक मंडल के सक्रिय सभ्य प.भ. मधुसुदनभाई पटेल के मातुश्री प.भ. चंपाबा दि. १३-९-०५ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासी हुई है ।

लसुन्द्रा : प.भ. अंबालाल रामदास पटेल दि. २१-९-२००५ को श्रीहरि का अखंड स्मरणक रते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

हिंमतनगर : श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सक्रिय सभ्य प.भ. जीतेन्द्रकुमार रावल की धर्मपत्नी युवान वय में दि. ३०-९-०५ को अक्षरनिवासी हुई है ।

अहमदाबाद-नरोडा : प.भ. निरंजनभाई विनायकभाई नामदार की मातुश्री सविता बहन दि. २१-९-०५ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती अक्षरनिवासी हुई है ।

गांधीधाम-कच्छ : प.भ. हीरालाल छगनलाल मीराणी दि. २६-८-०५ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।



नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में शरदोत्सव प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री आरती उतार रहे हैं। साथ में संत तथा हरिभक्त आरती के दर्शन का लाभ ले रहे हैं।



जयपुर (राज.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शन देते हुए श्री राधाकृष्णदेव, श्री हरिकृष्ण महाराज।



विजया दशमी के दिन कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर के मुख्य शिखर की शिला का पूजन करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री।





सेटेलाईट श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित भजन संध्या में पधारे हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री को श्री मुकेशभाई तथा श्री मनोजभाई सुवर्ण माला अर्पण करते हुए।



जयपुर मंदिर में सभा
ो सम्बोधित करते हुए
ह मंत्री श्री गुलाबचन्द
कटारिया (राज.
सरकार)

यपुर (राज.) मंदिर में
पाटोत्सव के यजमान
प.भ. मनुभाई एम.
टेल का स्वागत करते
हुए महंत शा.स्वा.
आत्मप्रकाशदासजी।



HREE SWAMINARAYAN REG. NO. G.A.M.C. 003 Valid up to December 2005

REG. NO. GUJ.581



विजया दशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजके ३३ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग पर संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री आशीर्वाद देते हुए ।



पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्राकट्योत्सव प्रसंग पर सम्प्रदाय विद्वान कथाकार शा.स्वामी हरिकेशवदासजी द्वारा प्रकाशित तक का विमोचन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के प्राकट्योत्सव प्रसंग पर संप्रदाय के संत तथा आग्रगण्य हरिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतार रहे हैं ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर बद्रिनाथधाम में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए

ful Kharsani